चाँद चढ्यो गिगनार

रामनिवास शर्मा

विगत

चाँद
चढ्यो
गिगनार

कृष्ण जनसेवी एण्ड को, बीकानेर

चाँद
चढ्यो
गिगनार

म्हारी दीठ

म्हारी काण्या सामाजिक जीवन र उतार चढाव रो लेखो है। समाज
य घटन आळी घटनावा न हू खुली दीठ सू देखू वा माथ विचार कर
रन करू अर घटना र भूळ कारण नै खोजन रो जतन करू। इ कारण म्हारी
ण्या समाज र च्यारू मेर घूमती रेव। पण हू आ नी कय सकू क म्हारी
ण्या समाज रो लेखो जोखो है। नूवी दीठ राखण र खातर कई काण्या
माज र साम परसन खडिया कर देव अर वारो पडूतर समाज मू चाव। इ
रण वै काण्या मनोविग्यान री मानीज।

उपन्यासा माथ म्हारी दीठ इतिहास कानी जाव। इतिहास री घण
री घटनावा म्हार सामै घणा उळझ्योडा परसन खडिया कर देव। हू वा
रसना रो पडूतर खोजू पण इतिहास बठ मौन हुव। वा परसना रो हू विगत
टनावा र सार समाधान करण रो जतन करू। इतिहास माय परसन अर
डूतर अता ही अधूरा है का उळझ्योडा है जतो इ सान रो मन। इ कारण
प यास रा पातर इतिहासकार र सामै परसन खडिया कर देव।

म्हारी चिन्तन री दोहरी धारावा हूवण र कारण हू समाज री विसम
रिस्थितिया माय झूमते इ सान री मानसिक स्थिति माथ लिखू अर दूज
ानी बीत्योडी घटनावा माथ विचार करू। जक इ सान रा खुर खोज ही
मिट्ग्या है बारी मानसिक स्थिति रो चिन्तन करू समाधान खोजू।

म्हारो जतन ओ रेव क हू समाज री विसम स्थिति सू यूझत इ सान री
सामाजिक मानसिक अर आर्थिक स्थिति रो खुला सो करू।

जग रो सार दो बाता माय है याद राखणू अर भूलणू। ईश्वर एहसान
अर मौत न सदा याद राखणू अर आपर क्योड उपकार न भूल ज्यावणू।

राजस्थानी भासा साहित्य अर सस्कृति अकादमी बीकानेर सू मन इ
पोथी प्रकासन माय आर्थिक सहयोग दिया इ कारण वीरो हू आभारी हू।

श्री कृष्ण जनसवी रा भी आभारी हू जक र सहयोग सू पोथी छपी। श्री दीपचन्द साखला (साखला प्रिटस) अर दूजा भायला जका रो जाण अण जाण समय बरावर सहयोग मिलता रह्यो है वांरा भी आभारी हू।

बसन्त पचमी 2045 रामनिवास शर्मा
बीकानेर

समस्याधा सू
जूभण माय
सा'रो भर
प्रेरणा देवन आळी
घर धिराणी
श्रीमती कौशल शर्मा
न

सुहागण-भागण

पाटे माथ तलाई वणाय न पीपळी रोप्योड़ो नी। घीरा दियो चम हो। लुगाया गणा गाठा पर न कमरिया कसुमल ओढ़णा व घाघरा पर न गाल घरो बणाय न पीपली र चाक्कर चटी ही। बूढ़ी पिडताणी करवा चौथ री सुहाग री काणी कव ही। वीर हाथ माय आखा हा। सगळी लुगाया आप आपर हाथ माय आखा लय राख्या हा अर काणी सुण री। लुगाया की सुहाग री काणी सुण ही जण र ख्वातिर आर गाव माय एक तडपन रव। पिडताणी केव ही क भाग्य री बात आवण आगी है। अबला पण तरुक है। मज सूना हैं।

मधु जणा चाल्या न अरग दय न पाछी आय न वळसिया पीपळी कन राख न हाथ जोड्या अर मन माय अमर सुहागण रवण री आसीस मागी। पछ आर माय बडा। एक नम्बा मो जीरा हा। जक माय आगी पिनग लाग्याना हो जक माय एक मिनख पूठ फर न सूतो हो। बिजळी रा लटट् चम नो। मिनख न देहा सूता देख न मधु र लिलाट माथ तान मळ आवा लाग्या। हाथा र नाखूना म नी मूना पडगा। के अरडान रा मुग थ मोळी पडगी। ताळवा सूखवा लाग्या। होठ माय माय ही बड बडावा लाग्या। हिय माय साप फिरण लाग्या। मन माय साच्या—ओ कर्ज पूरा वाल्या ही नी। डील मा र हाथ फेरया गी कोनी निजागी हुय न बोली~ सूयग्या क? एक आवाज अपडी हु' अर चुप्पी। आ तिर मिनावगा। आज करवा चौथ है। थारणू न्य न पिन्ग माथे सामगी। माल्यार र डाल माथ हाथ फरण लागी। जणा मधु न मालूम पडिया क आर डाल माय ता भावना रा लेस ही कोनी। थाकवाना चळन मा पडिया है। मधु मुस्त हुय नै डार माथ ताल्र नाखली। नूवा कपडा घाल न पिलग र मार राख दीना। वड स्वाच थू वत्ती बुझाय दी।

मधु अपूठी फिरन सोवण लागगी। उण वगत न न्यवण लागगी नको आज हाथ सू अलगा हुय न मन र माग चाल ना।

मधु वरी हुई। वर मिळ गाना हा। नील दिन दूणू अर रात चौगूणू निखरता जावा हा। जणा वा आगरा सू्ना काच माय न्यन ना मुर माथ

सुद ही हस पड़ती। छाती माय हाथ मुळाती फरती अर जणा जाघा माथ हाथ फरती तो सुद ही मदहोश हूय जावता। इण बगत फटाफट सगाई हूई अर ब्याव हुया। सासर जाय न देख्या क घर माय नी कोई लुगाई है अर नी दूजो मिनख। फगत बना उनी दोय जणा। दिन मिड्या एक छोरो आवतो अर घर रो छोटो मोटो काम करन पाछा चल्या जावता। आ मोट्यार बधयोड़ो आवता अर जीम न सोय जावतो। लुगाई न लुगाई नी मानतो पर हाळण समझता। ईंहा ही घणा बरस चूप चाप निकलग्या। हार न मधु पढ़ण माय मन लगायो अर बी ए करन मास्टरणी बणण री सोची। पण नौकरी कठ। आगलो दिन उदास्या खावता खावता ही निसर जाव। मिनख रा तो दरसण ही दुरलभ हुयग्या। दिन सिड्या छारो रोखतो जक न ही अलगा कर दियो अर काम काज सारू लुगाई राग दी। मन मसोती देवी जणा नौकराणी बतायो क अठ तांई हू पड़ी दाय पड़ा मिनख सू हताई नी करू ता म्हारो मन नी लागी। आगलो दिन घर र काम अर टाबरा री हताई माय निकल जाव बीनणी मा पड़त जी र ता जवान हा ना लार। सगलो काम हाथ र ईसार सू उराण चाव। था सू कदई पूरा उाल है क नी। छेहलानी तो रोनी दावाजी री करता हुसा। नौकराणी री बाता सुणता ही मधु रा मन समन्दर ताणा उमड़ पड़ता। आग्या माय चौमरा आवण सरू हूय जावता। मधु मन री पोला न रोक न मुळकती पण

दिन कटणू मुश्कल हुवता। रात ता छाती आगे खडी ही रवती।

मधु मास्टरणी बणगी। दिन सारा कटणा सरू हूयग्या। हताया सू जीव हलका रवतो। रात रो सगळो भार मास्टरण्या सू हताई करणन हळका कर रवता। पण एक नूब मास्टर र आया पछ मधु रो दिल जग्या ही छोड़ग्यो जक दिन पछ मधु रो मन सो सौ हाथ ऊचा उछळवा लाग्या। नूब मास्टर रो आपर घर र आग लानी पड़ी कोटडी माय रवण रा इन्तजाम कर दियो। तकलीफ रो मारियोड़ो मास्टर ग्या री छिया माय आराम सू रवणू सरू कर दियो।

पंडिताणी केव ही—सठा रो बेटा दिनुग बगा उठन नहाय धोय न करवा चौथ रो नाम लय न काम सळटावण सारू सिदी माय बळग्यो। दण आला दयग्या लवण आळा नयग्या। उलझ्याडो सूत सूलझग्यो। ढळती रात र माग सरा रा छारो घाडे माथ बठ न गाव कानी टुर पडिया। घर कूचा घर मशाला ।

पिंडत जी तीन चार दिना खातर दिल्ली गया। प्रीतम कोटडी माय पडिया पडियो अखबार पड हो। मधु प्रीतम न आपर घर बुलाय लिया। अठ ही पता जक सू म्हारा मन लाग ज्यागी।

प्रीतम कुर्सी माय बठ न असवार रा पाना पळटबा लागग्या। मधु साम बठन सुईटर बणावण लागगी। मधु रा ध्यान उचटतो जावो हा। आगल्या सनाया र साग हिल ही पण सुइटर नी बणीज हा। आम्या री लम्बो काजळ मन्होसी मू विसरो हो। काना माय एक सुर मराहट ही। कालज माथ धपक्या पड ही। छाती साम र साग मभरी चाल सू हाल ही।

बहनजी। आपन सी कानी लाग क ? मन तो झीणो भीणो ठण्ड लाग।

नी। हू तो छाया र नीच लाउजर पेन राख्यो है लहगा ऊबो कर न टाउजर दिखावती बोला।

'ओ चूडीदार पजाम पिडल्यामा पमीजता हुसी

'नी'

प्रीतम सोचता रयो। देखता रया। मन माय बोल्या 'कती चतर है' फेर बोल्यो— थार सरीरन र्मू की तकलीफ कोनी हुव ?

आदम्या अर लुगाया खातर अळगा अळगा हुव मन ता ठा ही कोनी हा' अचम्भ मू भर न प्रीतम वाल्या।

थोडी ताळ पछ मधु कानी— आओ मास्टर जी ताम खेला पढतर आमण मू पला माय ली आरी माय जाय न ताम लेय न आई। ताम र लार गळ मिल्योडी मम साम्ब री तस्वीर मढ्योडी ही। ताम खलती वेळा ताम रा पत्ता हाथ मू फिमळ फिमळ न पड हा जिया जाय सू साडी। मधु कानी मास्टर जी आ ताम घणा अरमाना सू खरीदी ही पण हालताई रा उद्घाटन नी हुयो। आज थारे हाथा मू पली पोत खेली जाए है।'

सीपरी रा एक बाजी खेली जी। मधु बोली मास्टर जी म्हारा जीव घबराव मलता जाव ही अर आपर कन्ने रा बटन खोलती जाए ही।

आ देख न प्रीतम री आख्या सपकवा लागगी। मास्टर जी रो हाथ पकड न खुना छाती माय फिराती कानी— थे अठ हाथ फेरता रवा।

पिडताणी जी कव हा—करवा चौथ न सेठा रा बटो सरे पूग्यो। मठा रा मन घणू हरख सू भरा ज्यो। मा राजी हुयगी। पण रा तो भूडा हा लिख ग्यो। मैंनी मू रच्योडा हाथ चोगणा लाल व्हग्या। पूची पमीजवा लागगी। माथ गे टीको पसीन मू गीनी हुयग्यो। आम्या प्यार मू नाचण लागगी।

गौरी एक रात गया पछ करवा चौथ री राणी सूणी। चन्द्रमा न अरग दय न भाजतो सी चूरमै दाल मू बरत गाल न माळिया माय गई। सेठा रो बेटो सात मू भरियो आस्या वारण कानी पाड़ता दाख्या। पण वारणू ढकिया। चौथ माता रो परगाद भूट माय दियो अर मान मू बोली— बोळा दिना मू आया। ईहा सुरत किया गेमो हो ?

म्हारी पण आज री रात ही थार कन गुजरली आग बोल्या— काल मन लाग उठाय न सय ज्यावला। थ पछाड़ राय गाय न रोवोला।

युंको थार मू ना मू —धण बोली—'थान आ कूणाण कठ मू दन्नी। आगा ता मन्ना ईया ही साग रवाना अर करवा चौथ पूजा ला।

सेठा रा बेटा बोल्या— आ बात कोनी है म्हारा घर धिराणी म्हान आवती वेळा मारग माय एक साप भागता मिल्या। म्ह बिन दुत्कार दियो क तू म्हारा रास्तो काट न क्यूगण क्यू करे। जाओ दिना मू घर जावा हा। काळो नाग पण फुलाय न बोल्यो–हू सौ बरसा र जीवण मू थावयोडो बळण खातर ताव ही पण तू टाल दियो। टावयांरो काम नी करणू। ई कारण बळू तो कोनी पण तन जरूर डसस्यू।

हू नाग देवता–हू बोल्या — हू नाग देवता थ मन एक रात रा जीवण देवो। हू म्हार मा बाप मू मिलल्यू गौरी रो मूण्डो देख ल्यू। नाग देवता चौबीस घड़ी री मोहलत दी अर म्है वाचा दियो कि आ बात धण न छोड न किन्है ही नी क बोला। वाचा लय न नाग देवता जक मारग सू आया हा मागी मारग पाछा चल्याग्या। बोल गौरी विश्वास आग्या क कोनी ?

धण बोली— आपा सदा ही रमता र वाला। चौथ माता सन्ना ही भला करली।

आधी रात ताही चौपड पासा मन न दो यू जणा सूय गया। आरण कन खड़ी चौथ माता नि ता सू भरियोड़ा खड़ी ही। साच ही—ज सेठा र बन्ने न ना बचायो तो आपणू विश्वास ही उठ ज्यासी। फर आपा न कुण पूज सी। ससार मू धरम री बात ही उठ ज्यासी।

मधु टसकती बोली— म्हारी आ पीडा नासूर सी बढती जाव। जद दिन म्हारा हाथ भूल सू आपर हीन सू लागीग्यो वो दिन पाछ म्हारा मन आकळ वाकळ हुयग्यो। हू अपण आप न भूलगो। हू सन्ना सुहागण हू पण म्हारो मन आज ही कुवारा हा। म्हारो शरीर ब्याव न तरस। समाज म्हारा याव करिया पर मन मू कुवारी हू।

प्रीतम मधुर डाल माथ हाथ फरता जाव हा। मधुर डाल माथ एक सुरसराट दोडण लागी। मधुर जीवण रो आ आज पलो मिन है जण काई मरद वीर ढोल माथ हाथ फरे है जद माय पुरुसत्व है। आज ताही मधु इण तरह र हाथ न तरस ही। आज वा मगळी कमर बान्धी चाव ही। करमा सू भी भीचवाणी मनस्या आज इनाम र माग फलता जाव ही अर के क लाग ही मधु आपरी सुध बुध भूलगा।

मासळ रात गुजरया पर मालिय री पडया माथ पाळा नागबाणू सुकरियो। पलो पगो माथ बारूरत छिडकाय करियाडा मिल्या। मन री ताप मिल्या नाग रचना विचार करिया नागी रा वटा तू म्हारी जलन मिटायणी पर काई करू वचना म बाध्याडा हू। दूसरा पडा माय दूध सू छलियो कटारा मिल्या। दूध पावन बोल्यो—थारा मदा ही भलो हुव म्हारी भूख मिटायणी पण जाद करू बाचा रालना पडसी। तीजी पडी माय दाळ चूरमू मिल्या। दाल चूरमू माय न नाग दवता टगकता टसकता आग चाल्या। मालिय र माय वडिया।

सठा र घट री बहू लट आपर पलग सू नाच लगराय न सूती हा। चाथ माता नागण बण न घट बठगी। नाग दवता हाळ हाळ आग चाल हा। नागण फूकार मार न बाली—अर तू ठमै कोनी। थारा धरम इब ज्याव लो। माटयार रन सुता छुगाद न तू मरम हुय न देख। तू पाछा जाव है कोनी?

नाग दवता री मति बावडा कोनी। आग बढता गया। चौथ माता रास मायन बाली—नमकहराम। थार तन रा जलन मिटाय दी। दूध पाया। चूरमू दाळ खुआई ताइ थारा भूख नी मिटा। फर तू क चाव? एक पावणो ही आग बढिया ता भस्म हुय जावला।

नाग दवता ठमिया कोना। चौथ माता जार सू फूकार मारी। नाग दवता जळन भसम हूयग्या।

दिनग मगळ गाव माय हाका फूटयो। साहूकार क बटे न नाग दवता डसण खातर आया पण चौथ माता वीन भसम कर दिया।

पिडताणी आगा लवण खातिर बात राखी। चिमठी आख्या र लगार पिडताणी बोली—चाथ माता जिसा साहूकार र बटे माथ तूठी जिसी सगळा माथ तूठीज। चिमठी रा दाना पीपळी माय नाख दिया। सगळी लुगाया विया ही करियो अर पगा लागी। पिडताणी चूडा चूनडी अमर हूवण रा आसीस दी।

मधु र पिता री बीमारी रा तार आया आध मन सू मिलण खातर गई। मधु रा बाप ज्यै रा रोगी हा। मारा सुहाग लम्बा चाल भी सक हो अर नी भी।

मधु री मा सगळी बात सुण राखी ही। मधु न ममझावता, बेटी एक ही भली माय साड अर बल न पाणी पाया जा सक। बात फकत समझण री है। थार बाप न देख।

मा री बात सुण मधु विचार माय पडगी भल आ क बात है?

मूमल

मार कूट र लिखणू-पढ़णू मांय लियो जणा बापू मठ हा चाकरी करण रो कहयो। दस बीस घरां रो गांव। रेल सूं दो बीसी कोस दूर। पिरग्या हुवे जणा पाळर पाणी पीवण सारू मिल नी सा घरां रा बळबळा पाणी। चौमासा मांय खेत रा काम वाकी र दिनां मांय ऊंट री जट का भेड री ऊन रा केरिया कातो का चरभर रमो। गांव मांय कांय धंधो नी। साल सुआई रा पड़ता काळ माम नवण रा फुरसत ही कानी देवता। सती जठ गी मूवी हा। घर रा खरचो डाकण सो मूंडो फाडियोड़ो रवतो। खावण न लूणो-सूण धान चाहिजे। गांव रा सगळा लोग भूख सूं बाथड़ा करे। बापू री बात घणी ही चोखी ही पण गांव मांय नी तो चाकरी अर नी मजूरी। हारन हूं बोल्यो— बापू! आपरे रिस्ते रा भाई अहमदाबाद रेवे वां रे नाम कागद लिखन मन वां रे कन खिनाय देवे तो म्हारी वठे कठे ही नौकरी लगाय देवे। वां रे नाम रो कागद लेयन चार दिन बहीर हूयन नागौर आयन आधी रात न गाडी चढ़्यो।

सारी रात आगला दिन गाडी मांय चालता रह्यो। थळी लू री फटकार नानी री याद दिरावती ही। मोल रो पाणी पीवतो गुड़ रो चूरमो लूण मिरच री चटणी र माथ खावतो दूजे दिन सिझ्या पडियां पछ आबूरोड पूग्यो जणा जीव मांय जीव आयो। बिरखा मोकळी हूयोड़ी ही। जमी हरी करस ही। वठ सूं गाडी चाली जणा ठंडा पून रा फटकारा लागबा लाग्या। थड री घुंडी खोलन छाती माथ पून रा फटकारा लियां गाडी रा लट्टू घसग्या हा। ठंडी पून र लागतां ही डब्बे रा सगळा मुसाफिरां रो जीव सोरो हूयग्यो। गाडी र हिलबे साग सगळा न उबास्यां आवण लागगी ही। टाबरिया मावां री खोळ्यां मांय सोयग्या हा। म्हारी आंख्यां मांय नींद री थपकी लागबा लागगी ही। हूं आंख्यां न घणू ही फाड फाड न खोलणी चावतो पण वै ता मिचीजती ही जाव ही। हारन हूं धूजीवणग्यो। रेळ गाडी खडखडाट करती भागती जाव ही।

आज सूं अड गड तीन सौ बरसां म्हारे जियां ही भीखरा मारियोडो काळ सूं टूटयोडो अमरकोट रो राजा आपरे बेटे महेन्द्र र साग घर स्यूं निक

ळघा हा। लगा लग पडत काळ मू गाव उजडग्या हा। घणरा गामर मर ग्या हा। करमा हाडका रा ढाचा हुयग्या हा। राई मूरा न ताल बणगा। आखी साळ चालती वळती पून चामडी न गाल बणाय दी हा। जाग जागी उणग्या हा। हारन राजा राग लुगाया न भेळा करन डागरा मामरा साग गाव मू टुर पडियो। मारग पूछता आखी रात चालता दिन माय पडाव गरतो गाव र गोरव पूग्या। पाणा मू भरिया लबा लब तळाव दख्या जणा आख्या फाटती ही रयग्यो। गाव र ठाकर कन मदत भिजवायी क अमरकोट रा राजा आपरी रयत अर डागरा न लय न काळ रा मारियाडा आया है। ठाकर सा बडा ही भला हा। मासग सार अडाव बतायो किरसा न खत बताया अर ठाकरा र रवण रा बन्दोबस्त कियो।

गाडा आधी रात न अहमदाबाद टसण पूगा। मुसाफिरा र हडबडाहट अर कुळया र हाक हडबडाईज न उठयो। काका हला पाडतो आया। गाठडी लय न ड बे मू उतरन काक र लार लार चालण पडियो। बापू धणी ही समझ दारी रो काम कियो मन बीर करण र पला ही काके न सगळ समाचारा रो कागद लख दियो हो। नी तो हू इ मो माम्या र छात जिरय स र माय काक न कठ ढूढता। इ चमकरा सो सन्क माय खडिया रवता। बमगूगा सा 4 5 दिना ताहा म र न दखता रह या। सगळा स र रात दिन चालतो रवता। मीटी ताळे दाही मिनख आख दिन अर आखी रात आवता जावता रवता। कि ह ही मरण री फुरसत नी हुवती। काक साग म र माय घूम्यो। सडका पिछाणी नौकरी खातर पेडचा माय जावणू मरू कियो। काके री जाण चीण माकळा हा ई कारण मान माय ही नौकरी लागगी। दो तीन दिन तो मील माय घूमता रयो। आपा आप ही रूई पीणी ज ही सूत कत हो कपडा बणीज हा। हू तो देखतो ही रह यो। कपडे रा अता थान ता सपन माय ही कोनी दख्या हा। अचभो हुयो क अता कपडे रो लाग काई कर। माया काम करणा ही छोड दिया हा। हारन काक न पूछयो काका! अत कपड रा लोग काई कर?

झिडकी दय न काका बोल्यो— बार जाव।

आग म्हारी ता काक मू पूछण री हिम्मत ही नी हुई। म्हार मन माय घणा ही विचार आवता क आ बात काक न पूछू? पण मन मारन राखतो। रोटचा र खाऊ म्यू कुण धणी बात कर। मील माय नौकरी हुवण र पछ काका मन आपर हताळू सेठा री गिद्दी माय राख दिया। मील मू सीधो सठा री गिद्दी पूग ज्यावता। वठ ही खाणू माय लवतो अर गिद्दी रा छोटो मोटो

मगळा काम कर दबता म्हारा निन पाधरा हूयग्या। हिसाब किताब रा जाण कार हूवण मू सठा रा मन भावता हूयग्या। मग रा बटो म्हार सायनू हा जवा गट्टो माय ही सूवता। रात न मन ता पड़ता ही नाम आय ज्यावतो पण वान बाळी मोडी आवतो। माय ग्वण कारण हूं बीरा पक्का भायला हूयग्या। एक दिन वा मन पूछ्या—तन पड़ता ही नींद कियां आय ज्याव मन ता आधी रात ताई नी आव।

हू ई रा काइ पड़ूत्तर दवता। जात रामण स्वातर बोल्या भाइ! हू गाव रो आदमी हू। जक कारण पड़ता ही नाम आय ज्याव। पछ एक दिन वो मन मगळी बात बताई क म्हारा एक छोरी सू नेह हूयग्या है। जकी रो ब्याव सूरत माय हुया है।

मन घणू ही अचम्भा हुया। ब्याव प ली प्रेम किया हुव। म्हारा ब्याव तो हूयाडा हा पण आ सगळी बाता माय हू कारा हो। सगाई ब्याव हूयाडा दम्या हा पण प्रेम हूयाडा आज ताही सुण्या नी हा। सठा रो छोरो मुळलाय न बोल्या—तू गाव री बूथ है। ■र रा खटका दम्या कानी। पछ वा आपरी सगळी बात बताई क किया बीर भाई र साग सिनमा दखण न गया हा। अधरा हुया पछ बीरा भाई सीट बदल न बठग्यो। एक मीन माय घुम हुयन ■ जार स्यू थाप मारा। वा बोली 'आ क करा हो।' जणा मन ठा पडियो क आ म्हारा भायला नी हूय न बीरी बन है। वा बी स्यू आगली सीट माथ बठग्यो है।

हू बोल्या—तू अठ कणा आयगी?

बोळी ताळ हूयगी वा पड़ूत्तर दियो आग बोली—

तन ठा नी हो क'

अर! मन ठा हुवता ता हू थापा कियां मारता

आ आ बात है

सगळी बात हसी माय उडगी। जक दिन पछ म्हारो आवणू जावणू वदता गया। म्हारी हयाळी माय बीरी जाघ सू हूयोडा घाव नासूर वणतो गाव। वार वार मिलण भाटण सू बा घाव नासूर वणग्यो। हू भट हाथ दखन वाल्यो— कठ तू तो झूठा ही बखाण कर

भायलो हस न बोल्या— तू बावळो हो है। हयाळी माय घाव थोडा हुव। ओ घाव ता दिल माय है। इ कारण ही हू चुप रेवू हू। रात न बीरा ही सपना आव। अब किया पार पडसी?

आ कयन वा गळगळा हुयग्या। जणा म्हार मन माथ क रात चालवा लागा। म्हारो 'याव हुयाडो है। पण मन हाल ताई आ मालम कोनी क मोटयार लुगाइ रा नातो क है। प्रेम नाव रा नी तो पोथ्यो म्ह्या अर नी सुण्या। पण बी र टूवण आळी रात न बा रोय न म्हारी छाती माथ मू डा घाळियो अर बोली—म्हारा मन किया लागसी ! हू पुचकार न चुप हुयग्या। जणा हू घर स्यू वीरा हुया कवळ कन खडी खडा बा म्हारा सुगन मनावती ही। हू बीर कानी देख्यो तो वारी आख्या कनला आढणू गीळो हो। अ सगळा चितराम म्हारा आख्या र साम आयग्या। म्हारो हिवडो भी जोर जोर सू रोवा लागग्यो हो। हारन हू भायल न झरभोळ बोल्यो 'भाया ! काई ई न ही प्रेम केव है।

हा बा बोल्यो। जकी रात पछ म्हारा दिन घू धाकर, आवा लागग्या अर रात काळी काळी डरावनी सी लागवा लागगी।

राजाजी रा कवर महेन्द्र बडा ही बाको छलो हो। दिन सारा निक ळता ही महेन्द्र रो डीळ पागरवा लागग्यो। मूछा माथ ताव देय न जणा बो साड माथ बठ न निकळतो, लुगाया थुथकारो नाखती। बूढा बडरा जुग जुग जीवण री आसीस देवता।

चौमासो निसर ग्यो। दसरावो आयग्यो। दसराव र दिन गढ र सामै वाखळ माय गाव रा ठाकर सा आपर मौजीज सरदार साग बठ्या है। राजाजी आपर कुवर महेन्द्र साग बठा हा। असवाडै पसवाडै गाव रा लोग अर लुगाया खडी ही। सेना रा मिनख पट्टा रा खेल दिखाया। घुड सवारी रा करतब दिखाय कुवर महेन्द्र न करतब दिखावण रो नूतो दियो। कुवर महेन्द्र बूढा बडरा न नमस्कार करन वाखळ माय आया। वाखळ न नमस्कार करन पलक भपकता ही तीर सू सही निसाण लगायो। तलवार र करतब माय चोखा चोखा री मूछा साफ करगी। आपरी काळी साड माथ बठ न दौड लगाइ ता सातरा घोडा न लार छाड दिया। ठाकर सा थूथकारा नाख्यो। रावळ री लुगाया वावळ योछावर किया। मूमल र गाला माथ सुर्खी आयगी कसणा टूटवा लागग्या। टूक्या फाटण सू मू डो सास र साग कुण सा गरा हुयवा लागगी। मन हाथ सू निसरग्यो।

हू साचवा लागग्या म्हारी धण र बार माय। काय द हू किया देऊ। बा पण्णू जाण ही कोनी। काळी हिरणी सी गोळ आख्या आसवा सू भिज्योडी म्हारी छाती माथ सो सो ऐरण मारवा सी लागगी। आखी रात आख्या फाडतो रवतो। कणा ही बा आवती दीखती कणा ही जावती दीखती। मुळकती

आवता अर उदास हुय न जावता दाम्पता। कणा हा हू बीर लवण मातर हाथ पसारता। म्हारो हाथ पून माय झूलतो रवता। हू चित्राम हुयोडो देखतो रवता।

आधी रात सठा ग छारा पसवाडा फरता रवता। तडफता रवता बिच्छू र डक लाग्योडो सा। हारन हू उठन कवता—भायला आज इहा किया ? 'अर। आज काई काई बात हुई ?

'आज जणा वा आपर होठा रो मीठा रस पा वो बतावता—पछ म्हार सगळ डील माय ऐक जळण हुयगी। म्हारो मन म्हार हाथ सू निसरग्या। म्हारा होठ सूग्या रव। वार वार पाणा पीवण सू भी जीभ ताळू न छो" माती सा दाता सू टकराव। हाथ माय तणाव हुव। सगळ डील री नाडया टूटती सी लाग। जर गा र मरण सू प ली राहिणा र अधरां रो चून्या लवण् चाऊ हू।

जीभ ताळू स चिपकगा। होठ सूखग्या। हाथा रा मुठया भीचाजगी। आख्या मिचीजगी। वो री आ हालत देखन हू डरग्या। बीन झझोडिया।

ओ क कर वा थाल्यो—मन कल्पना माय वीरो सुग नी ल्वण दख। साच ही घडी एक या "णी भात उद्वेग माय रह या। आधी रात गुजरगी जणा वो सावळ चत हुयो, पाणी पाव र पसवाडो फेरन सोयग्या। हू सगळी रात घडी री टिक टिक सुणतो रह्या अर घडी री सुइया दखता रह्यो। रात रा हर पळ मन भ्रम करात रह्या अर जावती बळा म्हार माथ रहम रा दो आसू रा टापा नाखता जावतो ओ रहम जक सू हू धण रा छाती माय मूडा लकोय लवणू चाय हू, पण ।

पीर एक गत गुजरगी ही। माळिय माय दियो चस हा। मूमल ढोल्यि माथ सूती सूती पसवाडा फेर ही। काचली रा कसणा खुलन छिटकग्या हा। वा वार वार आपरी छाती माथ हाथ फेर ही जिया गम्योडी चीज न साज ही। चीज ना मिळण सू मूमल मचळती जाव ही। खुल गोख वानी देख ही। उदरा र सडक सू चान ही। ठड झीणी झीणी पडवा लागगी पण चीर लिलाड माथ पसीन री बूदा चमक ही। गाख सू हाथ र सार स्यू महेन्द्र माळिय माय उतरिया। बीन दखता ही मूमल सुध बुध खाय बठी अर हाथ बढाय न बाथा माय लवण खातर आग चाली। आख्या माय मदहोसी ही पगा माय फुर्ती ही। 'लस हू थार वि या किया ' टूटक मबद सू ढ सू थार आया।

आ वचन वो गळगळो हुयग्या। जणा म्हार मन माय करात चालबा लागी। म्हारो ब्याव हुयोड़ो है। पण मन हाल तार्ई आ मालम कोनी क मोट्यार लुगाई रो नातो क है। प्रेम नाव रो नी तो पोधो दख्यो अर ना सुण्यो। पण वी र हुवण आळी रात न वा रोय न म्हारी छाती माय मूं डो घालियो अर बोली—म्हारा मन किया लागसी! हू पुचकार न चुप हुयग्या। जणा हू घर स्यू वीदा हुयो क्वळ कन खड़ी खड़ी वा म्हारा सुगन मनावती ही। हू वीर मानी देख्या तो वीरा आख्या कमला आढ़णू गीळो हो। अ सगळा चितराम म्हारा आग्या र साम आयग्या। म्हारो हिवडा भी जोर जोर सू रोवा लागग्यो हो। हारत हू भायल न झरभोड बोल्यो 'भाया! काई ई न ही प्रेम केव है।

हा बा बोल्यो। जबी रात पछ म्हारा निन घू धाकर जावा लागग्या अर रात काळी काळी डरावनी मी लागवा लागगी।

राजाजी रा कवर महेन्द्र बडा ही बाको छलो हो। दिन सारा निक ळता ही महन्द्र रो डील पागरबा लागग्यो। मूछा माय ताव देय न जणा बो साड माय वठ न निकळतो, लुगाया युथकारो नाखती। बूढा वडरा जुग जुग जीवण री आसीस देवता।

चोमासो निसर ग्या। दसरावो आयग्या। दसराव र निन गढ र मामै दाखळ माय गाव रा ठाकर मा आपर मोजीज सरदार साग बठ्या है। राजाजी आपर कुवर महेन्द्र साग बठा हा। असवाड़ पसवाड़े गाव रा लोग अर लुगाया खड़ी ही। सेना रा भिनग्य पड़ा रा खेल दिखाया। घुड़ सवारी रा करतब दिखाय कुवर महेन्द्र न करतब दिखावण रो नूतो दियो। कुवर महन्द्र बूढा बडरा न नमस्कार करन चाखळ माय आयो। चालळ न नमस्कार करन पलक भपकता ही तीर सू सही निसाण लगायो। तलवार र करतब माय चोखा चोखा री मूछा साफ करदी। आपरी काळी साड माय बठ न दौड लगाई तो सातरा घोड़ा न लार छोड दिया। ठाकर सा थूथकारा नाख्यो। रावळ री लुगाया चावळ न्योछावर किया। मूमल र गाला माय सुर्खी आयगी कसणा टूटवा लागग्या। टूटया फान्ग मू मुन्नी साम र साग कुए सी गरी हुयवा लागगी। मन हाथ सू निसरग्यो।

हू सोचबा लागग्या म्हारी धण र बार माय। कागद हू किया देऊ। बा पढणू जाण ही कोनी। काळी हिरणी सी गोळ आग्या आसवा सू भिग्योडी म्हारी छाती माय सौ सी ऐरण मारबा सी लागगी। आखी रात आख्या फाडता रवता। कणा ही वा आवती दीसती कणा ही जावती दीसती। मुळकती

आवतो अर उदास हुय न जावता दीखती। कणा ही हू बीन लवण खातर हाथ पसारतो। खाली हाथ पून माय चलतो रवतो। हू चिनाम हुयोडो देखतो रवतो।

आधी रात सठा रा छारा पसवाडा फरवा रवतो। तडफता रवता बिच्छू र डंक लाग्योडो सो। हारल हूं उठभ कवता—भायला आज ईहा किया? 'अर। आज काई काइ बात हुई?

आज जणा वा आपर हाठा रो माठा दियो चो बतावतो—पछ म्हार सगळ डील माय ऐक जळण हुयगी। म्हारो मन म्हार हाथ सू निसरग्यो। म्हारा होठ सूखा रेव। वार बार पाणी पीवण सू भी जीभ ताळू न छोड मोती सा दाता मू टकराव। हाथ माय तणाव हुव। सगळ डील री नाडया टूटती सी लाग। ज र ता'र मरण सू प ली रोहिणी र अधरा रो चूम्बो लवण् चाऊ हूं।

जीभ ताळू स चिपकगी। होठ सूखग्या। हाथा री मुठया भीचीजगी। आख्या मिचाजगी। वी री आ हालत देखन हू डरग्यो। बीन झंझेडियो।

ओ क कर वो बोल्यो—मन कल्पना माय बीरो सुख नी लवण दव। साथ ही घडी एक वो इणी भात उद्वेग माय रहयो। आधी रात गुजरगी जणा वो सावळ चत हुयो, पाणी पीव न पसवाडो फरन सोयग्यो। सगळी रात घडी री टिक् टिक् सुणतो रहयो अर घडी री सुइया दखता रहयो। रात रा हर पळ मनै झक मरात रहया अर जावती बळा म्हार माथ रहम रा दो आसू रा लापा नाखता जावतो आ रहम जक मू हू घण री छाती माय सूती लवोय लवण् चाव हू, पण ।

पौर एक रात गुजरगी ही। माळिय माय दिया चस हा। मूमल ढालिय माय सूती सूती पसवाडा फेर ही। कावली रा कसणा खुलन छिटकग्या हा। बा वार वार आपरी छाती माथ हाथ फेर ही जिया गम्योडी चीज न खोज ही। चीज नी मिलण सू मूमल मचळती जाव ही। खुल गोखे कानी दख ही। उदरा र धडक सू चौक ही। ठड झीणी झीणी पडवा लागगी पण वीर लिलाड माथ पसीन रा बूदा चमक हा। गाख सू हाथ र सार स्यू महन्द्र माळिय माय उतरिया। बीन देखता ही मूमल सुध बुध खाय बठी अर हाथ बढाय न बाथा माय लवण खातर आग चाली। आख्या माय मदहासो ही पगा माय फुर्ती ही। नेख हू थार वि या किया टूटक सबद मूड सू बार आया।

आ कयन वा गळगळा हुयग्या। जणा म्हार मन माथ करात चालवा लागी। म्हारो न्याव हुयोडो है। पण मन हाल ताई आ मालम कोनी क मान्यार जुगाइ रा नातो क है। प्रम नाव रा नी तो पोधा दक्यो अर ना सुण्यो। पण बी'र हुवण आळी रात न वा रोय न म्हारी छाती माय मूंडा घालियो अर बोली—म्हारा मन किया लागसी! हू पुचकार न चुप हुयग्यो। जणा हू घर स्यू बीदा हुयो कवळ मन खडी खडा वा म्हारा सुगन मनावती ही। हू बीर वानी देख्यो तो बीरी आख्या कनला आढणू गीळा हा। अ सगळा चितराम म्हारी आख्या र साम आयग्या। म्हारो हिवडा भी जोर जोर सू रोवा लागग्यो हो। हारन हू भायल न झकभाड बोन्या 'भाया! भाई ई न ही प्रेम कव है।

हा बो बोल्यो। जकी रात पछ म्हारा दिन धू धावर, जावा लागग्या अर रात काळी काळो डरावनी सी लागवा लागगी।

राजाजी रा कवर महेन्द्र बडो ही बाको छला हो। दिन सारा निव ळता ही महेन्द्र रो डोळ पागरवा लागग्या। मूछा माथ ताव देय न जणा बो साड माथ चढ न निकळता लुगाया युवकारो नाखती। वूढा बडरा जुग जुग जीवण री आसीस देवता।

चौमासो निसर ग्यो। दसरावो आयग्या। दसराव र दिन गढ र सामै बाखळ माय गाव रा ठाकर सा आपर मौजीज सरदार साग बठया है। राजाजी आपर कुवर महेन्द्र साग बठा हा। असवाडे पसवाडे गाव रा लोग अर लुगाया खडी ही। सेना रा मिनख पट्ठा रा खेल दिखाया। घुड सवारी रा करतब दिखाय कुवर महेन्द्र न करतब दिखावण रो नूतो दियो। कुवर महेन्द्र बूढा बडरा न नमस्कार करन बाखळ माय आयो। बाखळ न नमस्कार करन पलक भपकता ही तीर सू सही निसाण लगायो। तलवार र करतब माय चोखा चोखा री मूछा साफ करदी। आपरी काळी साड माय बठ न दाड लगाई तो सातरा घोडा न लार छाड दिया। ठाकर सा थूथकारा नाख्या। रावळ री लुगाया चावळ न्योछावर किया। मूमल र गाला माथ सुर्खी आयगी कसणा टूटवा लागग्या। टूकया फाटग सू मूंडो सास र साग कुए सो गरा हुयवा लागगी। मन हाथ सू निसरग्यो।

हू सोचवा लागग्या म्हारी धण र बार माय। बागन हू किया दऊ। बा पढणू जाण ही कोनी। काळी हिरणी सी गोळ आख्या आगवा सू भिग्योडी म्हारी छाती माय सो सो ऐरण मारवा सो लागगी। आखी रात आख्या फाडतो रवतो। कणा ही बा आवती दीखती कणा ही जावती दीखती। मुळकती

गरमावती मूमल बोली—'न्या ही काकी'

आज ताही तो मन इण बात नो मालम पड हो' पडूत्तर देवती बात टाळती नायण नीचो मुण्डो करन मुळकवा लागगी। नरा माय नाई अर परा माय काग स्याणप रो सेवरो लिया फिर। नायण देवती लुगाई री चाल पिछाण पेट री बात हाठा माथ ल्याव देव बीरयू वचणू घणू दोरो हुव। नायण मुळकती ज्यावती अर मगळ डीळ माथ पीठी करती ज्यावती। ममवरी करती ज्यावती क कवराणी जी जे सरूप वया रा। कवराणी जी रा मूण्डो धोळो पडवा लागग्यो। नायण मगळी बात समझगी अर होळ सी बोली—
कोइ जूठा वारियो (घाघडा) मत न्हाई ज्या। जात रो घणो ही देवज्यो हाल क्यो कातो हुयो है। बात जिग न्दी स्यू प नी पय पाछा घर तीज्यो। समझावण र लाग ही मूमल सगळी बात वताय न्दी। नाम पतो भी बताय दियो। म्हारा वेम साचा निकळगो। राजा जो न सगळी ठा है। समझावती वाली—पवराज्यो मत ना।

अमरकोट माय मामीडी विरखा रो समाचार मिल्या। राजा जी आपरी सगळी रयत न लय न पाछा अमरकोट आयग्या। महेन्द्र रात पडिया पछ अमरकोट मू दुरतो अर पौर एक रात गया पछ मूमल कन आय ज्यावतो। आधी रात मूमल कन रवता अर तडक पाछा दुर पडतो। महेन्द्र रो रोजीन रो आवणू जावणू रवतो। राजा जी न इण वात री ठा पडी अणा वे साड र तळा माथ डाम लगवाय न्दिया। महेन्द्र दूजी साड लय न पूगणू चायो पण पूग नी सक्या। इण उथडबुण माय 5 6 न्दिन निकलग्या। हारन वो सागण साड न मारू पाय न चाल्या।

मूमल रा जे न्दिन माल मा गुजरया। न्हाकन वा आपरी छोटी वेण सूमल सू बोली—तू किया हा मन महेन्द्र सू मिलावण रा जतन कर नी ता हू पागल हुय ज्यासू। महेन्द्र न किया ही मदेसो पुगाय क हू बी बिना जीव नी सकू। सूमल चतराइ मू काम करियो। मरदानू भेस धारण करन पौर एक रात गया पछ मूमल कन आई। मूमल भागन गळ मिली। गळ मिलता ही मूमल न ठा पडिया क आ डाढी मोट्यार रा ना है। भेद खेड हुई। सूमल हम न चूसवो लिया अर ढोलिय कानो चालती बोली—हू महेन्द्र तो नी बुलाय सकू पण भरम राखण खातर महेन्द्र वण न मोट्यार रा साग ता रच नी सकू।

रीमा बळता मूमल सूमल न ल्य सोयगी। दोयू हस पडी। थोडी ताळ धुम पुम चाल्ती री। रात न्ढळवा लागगी। दाया न नींद आयगी।

जाग आय न महेन्द्र मूमल न झाल ली। बाथा माय लय न आंग्या रा थोटा रा गाला रो प्यारियो लियो। मूमल सुध बुध खोयन बाथा माय झूलगी। महेन्द्र मूमल न उठाय र ढालिय माथ सुआई। पौर एक रात री जठ ताही मूमल साग रमतो रहयो।

महेन्द्र पौर एक रात गया पछ आवता अर तडक पाछो वग्या जावतो।

पगार मिलण र दूज दिन सर्चो राल न बाकी रो धन गाव मनीआडर सूं भेज देवतो। छुट्टी छपाटी र दिन काको मिलण खातर आवतो। नई सूं मिलतो। मिरी बात करतो। चोखी सीख देवता। मैं रा खाको बतावता। कमाऊ सगळा न चोखो लाग। भणिया मिनख माय रवण खातर हूं थाग्ो थोडी अंग्रेजी पढबा लागग्यो। सगळा माय छाप ही हू सार बाव सकूं। रोजीना रो छापो देखण कारण म्हारी जाणकारी बढती जाव ही। म्हारी घर घराणी री याद रो घाव सो रात दिन नासूर सा बढतो जाव हो। मन घणू पछाडा मारतो मिलण खातर सामै सियाळा हा चढती जुआनी ही पण मन भरा मारन व्यावस धार लवतो।

रोहिणी सासर जाय न पाछी आयगी ही। भायला दोफारा मिलण खातर जावतो। नाटक सिनमा माय लय जावतो। रोहिणी तो सगळी विद्या पढ र आई ही रण शहर भायन रो पूरा ही हाव खुलग्या हा। 20 25 दिना पछ रोहिणी पाछी सासर जावण री त्यारी करबा लागगी। भायलो बात घणा ही फावया पाई पण वा वोली मोटयार दाय लुगाई रात सक आ हूं भाय मोटयार कोनी रात सकू क। हूं मोटयार अर यार दा या न राजी राख सकू हूं। तू म्हारा यार है वो धरम रो पति। म्हारा धरम दो या र बफादारी रो ह। ए दोयू म्हार डील रा धणी हा। म्हारी [illegible] रता या ल्या र साग रसी। भायलो घणा ही ताफ्ना ताडया पण रोहिणी पाछा बेगा ही मिलण रो नाव लयन सासर चला गी। भायला ध्यार छ दिन चित भ्रम भटक्योडो डालतो रहया। पछ एक दिन धोळ दाफारा साबरमती माय जाय न डूब मरिया। गठ पडाड लायन रयग्या। हू खाट सिवक सो सगळा सेल देखता रहया। हू मू डा पान फाड न घण ही जोर स्यू रोयो पण भायला पाछा नी आयो।

गयोडो आज ताई पाछा नी आया वा प र बिया पाछा आवता।

मूमल र पगा माथ उबटन लगावती नायण बाली— कवराणी जी। आपरा डील ढीळो ढीळो सा किया लाग।

'सिर भारी है हू नय पिण्डो छुटायो । पाणी पी ै सोयग्यो ।

न्हिूग रोहिणी पाछी मूरत बावडगी ।

मूमल रो घाव नासूर हूयग्यो । रात न वा ज र खायन मरगी । वी री चिता माय अती जार स्यू लपटा उठी क अमरकोट माय बठो महेन्द्र जळवा लागग्यो । महेन्द्र रो भरम टूटग्यो क कोरा नाटक हो । मूमल महेन्द्र र भेस माय मूमल र साग सूती ही । आप री भूल मू महेन्द्र जळवा लागग्यो । वी आग स्यू खुद ही जळग्यो ।

म्हारी मुसाफिरी वोळा न्निारी हूयगी ही । बापू रो कागद छुट्टी लयन घर आवण खातर लिख्यो । देस माय विरला मोकळी रा समाचार भी हा । हू छुट्टी लय न घर आयो । रात न मेडी माय धण कन सोय न सगळी वात बताई जणा वा म्हार घणी चिप ै हसने बोली हू ता प ली मू ही थी आग स्यू जळू हू । पठ म ै मह द्र जळतो दीन्यो, रोहिणी जळती दाखी, वा सगळा साग म्हारी धण जळती दीखी रात जळती भीखी अर हू जळती दीसया ।

अ धरो डागळ माथ पसरतो आव हो ।

महेंद्र बडी मुस्कल सूं पूग्यो। मूमल न पराय मिनख मन सूंती देख मोचडी खोल'र पाछो टुरग्यो।

दिनग जणा दोयूं जणी मोचडी देखी तो रात र नाटक रो बडो ही पछतावो हुयो। मूमल मोचडी उठाय न छाती सूं लगाई। आख्या सूं चौसरा चालबा लागग्या। मोचडी माय बी नर री गंध ही जका लारल कई दिना स साग सोव। अब रो अस्तित्व बीर साग एक हूय ज्याव। दाय मिनखा री आग एक ही है जको मिलण साल तडफ अर मिलता ही बा जलन बचा जिया चमक उठ।

ठाव र नायण र मूंड सूं बात चाली क महेंद्र मरग्या है। महेन्द्र रो मौत रो हावो गाव माय फरग्यो। मूमल गकान आ सुणना ही फाटग्या अर हिवडो टूटग्यो।

सठा र छारे र मरिया पछ म्हारा स्चित ही भटकग्यो। मन पडी रावण साल आवती दीसबा लागगी। रात्यूं बीरा ही सपना आवता। रोहिणी बीरी मौत रा समाचार सुण न 15 20 दिना आडा घाल न अहमदाबाद आई। हूं मिनण साल गयो। सगळी बात बताई। रोहिणी घणी दुखी हुई। बा दो या न रावणूं चाव ही पण राग नी सक ही। बात आई गई हूयगी। रोहिणी मन धार धार मिलण रो कहयो। हूं मिलण खातर नी गया। बी र नावण र प ले मिन हूं मिलण खातर गयो। बाळो वातां हुई। हूं बोल्या— म्हार दोस्त रो नातो निभावण खातर हूं थार भोज माथहाथ फरणू चाऊ हूं।

बोली तरह हाथ फरू थार अर थी माय म्हार मन माय की फरक कोनी बा हसन बोली। हूं जणा बीर डील माथ हाथ फेरबा लाग्यो जणा मन मालम पडियो क बीर डील माय वडबानल सी एक तातेड निकळ। म्हारो माथ ज्यूं ज्यूं नीच आव हो बा लपट बन्ती जाव ही अर जणा म्हारो हाथ सूंडा कन पूग्यो जणा म्हारो हाथ जाण एक हजार बिच्छू एक साग ही म्हार हाथ माथ डक लगाया है जिया जळबा लागग्यो। म्हारो हाथ आपो आप ही हटग्या अर हूं हाथ पकडन बठ वठग्यो। हूं बोल्यो—हूं अठ ही जळ मरस्यूं। म्हारो दोस्त मन नीमबा लागग्यो। म्हारा हाथ पकड न घर र बार ल्याय न सडक माथ लडिया नर नीना।

रात पडगा जणा हूं गिदी पूग्या। नौकर सोवण री त्यारी कर हा। मन उतावळ आरळ देखन बोल्या—थावूं ईंहा किया?

'सिर भारी है ह क्य पिण्डो छुटायो । पाणी पी ने सोयग्यो ।

दिनूग रोहिणी पाछो मूरत बावड़गी ।

मूमल रो घाव नासूर हुयग्यो । रात न वा ज र खायन मरगी । वी री चिता माय धती जार स्यू लपटा उठी क अमरकोट माय वठो महेन्द्र जळवा लागग्यो । महन्द्र रो भरम टूटग्यो क कोरो नाटक हो । सूमल महेन्द्र र भेस माय मूमल र साग सूती ही । आप री भूल सू महेन्द्र जळवा लागग्यो । वी आग स्यू खुद ही जळग्यो ।

म्हारी मुसाफिरी बोळा दिनारी हुयगी ही । बापू रो कागद छुट्टी लयन घर आवण खातर लिख्यो । देस माय विरखा मोकळी रा समाचार भी हा । हू छुट्टी लय न घर आयो । रात न मेडी माय धण कन सोय न सगळी बात बताई । गणा वा म्हार घणो चिप न हुसन बोली हू ता प सी मूहो थी आग स्यू जळू हू । पछ म्हा महेन्द्र जळता दीम्या रोहिणी जळती दीखी, वा सगळा साग म्हारी धण जळती दीखी रात जळती दीखी अर हू जळती दीस्यो ।

अ घरा आगळ माथ पमरता जाव ना ।

बोलता-चितराम

म्हारी बात की के केऊ पली सगळी बात नवणी पडसी जक सू आपन ओ मालम पड ज्याव क मा बाप रा नातो रिस्तो एक झटक र साग इया टूट ज्याव जिया जनम जात बर हुव । जको छिया दाई रात दिन म्हार आग लार घूमतो रवता बो ही परमात्मा दाई दूर हुवतो गयो । हू पछाड खायन रोय पडी । खिलखिलाय न हस पडी म्हार दुख माय आ जाणन क ससार रा ओ ही नातो है रिस्तो है ।

म्हारा काका जको म्हार सू घण हुतरावता अर मन आपरी बडी बटी मानतो हा । जको माका पडता हा आपरो काळो छारो न भणियोन डावर र लार करगी अर म्हारा ब्याव चपरासी र बेटे साग कराय दियो । म्हारा बाप भरी जुवानी माय भाग पीवता पीवतो मरग्या अर मा ठीकरा घसती घसती ही बूढी हुयगी । जणाहप पिस्योटा वरतना माथ अवार ही हुयोडी कळह घणी निजरया लागग्या । म्हारो काको अर काकी तो यू जणा म्हा सू आटा टेडा रवा लागग्या । म्हारा चमकतो मू डो बीरी लाडसर मू चावा लागता । बो लारल जनमरोवर निकाळणताई रात दिन नाग्यान रवता अर जणा म्हारा हाथ पिळा कराय दिया जणा बीन चन पडिया । म्हारी भाळी मा बीरी ही बात माय आयगी अर रात दिन बीरे साग ही सगळी बात करती । म्हारी मा न म्हार बाप र मरण रा अत्तो दुख कोनी हुयो हसी जत्तो म्हार जनम रो । बा म्हार 'पोळा हाथ करण र भार सू दुखी रवती अर म्हारो काका म्हेरा नाभ उठावण री चि ता माय लाग्याडो रवतो । अर एक दिन—

आया सगारा रा सूवटा
न्ह्यो टोळी माय सू टाळ

गीत री कडी र साग साग मन आठाड र लार करदी ।

दरपण माय जणा हू म्हारो मूडा देखती मन म्हैया मालम पडता के दरपण म्हा सू प्यार करणन आग आव अर बा जिया जिया आस आवता ता एक साग ही एक मत्क र साथ बी माय सौ सौ दराड पड ज्यावती । काक रा काळा छिया लार भाक्ता दीसती । मा छानारा भार उतारन मरता जीवना

अन सासरो ही एक आसरो हो पण सासर री उठा फटक माय की पतो कोनी चालतो क कणा काई हुमी।

वगत भागता जावतो हो। पेट भरिया पछ दब्योडी भावना वधवा लागगी। आभो टोकसी सा दीखवा लाग्या। चवरा रा धूवो लाग्या पछ रूप निखरवा लागग्यो हो। पाम पडास रा मूडा याकवा लागग्या हा। गळी गुवाड री लुगाया मुन्डो देख न थूथकारो नाखतो। निखरतो रूप पर मसा सू आधा हूवा लागग्यो। कामनावा ईर्सा मू जळवा लागगी ही आ ईच्छा हूयबा लागगी क इन पसीन दाई उतार फकू। ओ म्हार लायक कोनी। ईन सा नाळी रा पाणी चाहिज अर हू तो मावानी मोसम हू।

राजरो पि डा छुडायन हू मोटयार न नयन यारी हुयगी। दूमरे वास माय सठ धरमच द री हवेली र पिछाड माय रवण लागगा। सेठा र कपडे री दूकान ही। मोटयार लुगाई प्रेम सू रवता हा पल्नो छारो हा दूजी आस न ब्याडी ही। म्हारी सठाणी र बगसी हुयगी। म्हारा दिन बाखन्या हा। रोटी सू अर कपडे लत्ते सू। सठाणी रा छाटा मोटा काम कर दवती अर हताई करन दिन गुजार दवती म्हारा दिन मोरा हुयग्या आन भी लादी वर्ती मू नारो छुडाय दिया हो घर आळा दिनग मिझ्या सठा र उगराई रो काम कर देवता जब मू घर र ग्नग्च माय सारा नागतो हा।

जणा सठ घर माय रवता हू कदई सठा र घर कानी कोनी जावमी ही सुगर मो कायदो राखतो। एक दिन हू मिझ्या राटी वणावण रा त्यारी कर रहा अत्त न पाळ री कुडा खट खडइजी हू भाग क कु टा खोलिया। वा रा मु डो देखन म्हारा प्राण सूखवा लागग्या। पूछया ईहा क्यू ? बे होळ होळ पग राखता आग कान पडिया। हू चितराम सी वारी पकडिया खडी री होस बावडिया जणा नारी नरन लार चाल पडी। फर पूछया— इहा उदास किया ?

मन मसपेन्ड कर दियो

आ ममप श क हुव हू उतावळी सू बाली

तू समझे न ममझाव

खुलामा कर न वताआ

नौकरी सू हटावण रो रास्तो है

म्हारा पग वठ ही चिपकग्या धम्म सू वठगी। वोलो जव काम किया चालमी।

रोया काम थोडा ही चाल मी। आयाडी आफ्त न यान्नो ही पडमी। आ हुयो किया

तन बतायो ही नी आज मू 4 5 दिन पछी खाग साहब आपर घर भेजियो। बठे मम साब बरतन मांजणा रो कियो। हू मना कर दियो जणा मेम साहब नाराज हुयने साहब सू टेलीफून मा बात करी अर मन ममपइ करण रा कहियो हू पाछो आयो जणा आखिम आळा घुसर पुसर करता हा म्हारा हताळू मन बतायो क म्हार माथ आफत आवण आळी है जणा मगठी बात म्हार समझ माय आई। हू बाल्यो—'नौकरी राज री करा हा राह री कोनी म्ब नेस्या लाया न।

म्हारो नाम म्पष्ट है। हू विमला री काका हू। म्हारो भाइ मना सू ही भागड़ी हो। भाग र साग मोठ धतूर रा बीज अर मलियो मिलायन पीवतो। भाग पींवता पीवता ही बन बम्यो अर लार छाडग्यो जुवान डावडी अर लुगाई। धाव माय धोवो करग्यो। कऊ ता दिन ! भाई मरग्यो भाभी बिमरगी। छोरी रा हाथ पीळा करणा ही पडमी। दो च्यार जग्या बात करी। छारा र देवण री बात चाली। भाभी बतायो क पीठ माथ धाळा दाग है। सगळी बात समझी अर भाभी न बताई। सगा सून करन चपरासी र छोर साग ब्याव रा बात पक्की की। भाभी आप री रास्ड सभलाई बीर सागे म्हारो रूकरो मिलन छोरी रा हाथ पीळा कर दिया।

हू मन म मोच्यो विमला गरीब रो घर बमासी। अर म्हारो एहसान मानमी। हू घणू ही इ बात म पडणू कोनी चावे हा पण भाभी रा आसू मन इ काम माय फसाय ही दियो। बात बुबाड रा साग भी मन ही बकता हा क कोई छोरी कुवारी रासीज। जता मुडा वत्ती बात। नूई बात नौ दिन पुराणी बात सौ दिन। होळ हाळ सगळी बात ठण्डी पड ज्यासी। जणा हू ओ सगळो काम सळटाय दियो।

विमला आपर सासू सुसर सू लडन न्यारी हुयगी। सगळे नित्रा हू बा लागी। नान ओछी बात करबा लागग्या। छोरी रा हाथ पीळा करिया पछे भाभी निश्चिन्त हुयन सास छोड दी। बा मन अर म्हारी औलाद न ले डूबी। नार जसो मरचा कियो वीर भार मू हू मरिया पछ भी उतरस्यू। म्हारो किया ही म्हार साग चालसी अर बीको कियोडो बीक साग चालग्यो। वीरी छोरी जणा पग बार राख दिया है व अब पाछा माय कोनी पड। म्हार धोळा माय धूड नाखनी।

मिझ्या हू सेठाणी जी कन जाय न सगळी बात बताई। वे धीरज बधायो अर सेठा सू बात करण रो कही। 2 4 दिन मुस्कल सू निसरथा सेठा र धिन्नडिया हुयो। बाळा दिन काम काज माय ही निसरग्या। एक दिन

काम सारू बठक माय सू चौक कानी जाव ही जणा म्हारी पीठ माथ हाथ पड़िया । म्हार डील माय फ्रस गन सा चमको लाग्यो । लार न्दया तो सेठ खड़िया मुसकराव हा । हू सरम सू मरवा लागगी । निजर मिली । उडत मन सू घर रो काम काज निवटायो । मन री दव्योडी च्छावा मडरावा लागगी । वे बाभडाभूत हुयन च्यारू मेर घूमवा लागगी ।

घर आयन सोयगी । घर आळा हाल ताई आया कोना हा । आजकल माडा ही आवता हा मन बडा ही दुखी हा । हू मगळा न छोडन भागन जावणू चावती ही । दूज छिण आ ईच्छा हुयवा लागगी के सगळी बात बान बताय देऊ । काम न गाठ्या काढव लागगी । मगळी रात फेर नूव रूप माय सोचवा लागगी । रोटया र बार माय आवण र बार माय । आवण रोटया लार है हू भी रोटया र लार । कण्ठ सूखवा लागग्या पाणी पीया जको कठा क नीच उतरिया पली ही भाप बण न उडग्या । हारन पसाबडा फरन सावण रो जतन करवा लागगी । जणा ही आख्या मीचती ता सेठा रा मुळकता मुन्डो दीखता । आख्या खोलती तो आखो ससार अ धर माय डूबतो दीखतो । हू साचती म्हारा काम सेठा सू है अर बारा काम म्हार सू । भाय स्वाथ मिलन तव नूव स्वाथ न जनम दियो ।

दो धारो एक स्वारथ पर जम्या टकराया हा पू जणा आपरो भ्रह्म त्यागन मिल बठ्या । पण ई माय म्हारो अह्म बिगरतो ही गयो अर अत माय सहक माथ आयग्या थोड़ा दिना पछ सेठ म्हार सू मिलणू कम कर दियो । वारा ममपेन्ड आन्र आज पाछो हुयग्यो । पण म्हारो पग जको माड बार पडग्यो हो बो पाछो आवण मुसकल हुयग्यो । सठा रा मान तोडण खातर दूसरा माथनिजर नाखी । भावतो बन्ता गया पण म्हार जीवण न नाळी र पाणी सा बणाय दिया ।

खूणै री वारी

दिनूग ग्यारा मिल्या जणा ही थोडो टेम मिल बा मन कोनी लाग गळी कानली वारी ग्यान न गेग्गण लाग जाऊ। वारी गोसता ही जरन रा बद बू मू मायो भरणावा लाग जाव। अर मूड रो पीक पिच करतो प ला पडियोड पीक माथ जाय पड। पीक माथ पीक पडतो ही जाव अर मोट लेवड सो बणतो जाव। पान रा जो पीक एक जम्या पडता पन्तो गरो गून रो नाळा सा बवण लाग जाव। कणा कणा हा घणा चूनो नागवाड पान रा टुकडो ही पीक र साग जाय पन। जरद री पीळी पीळी पत्यां माय काय रो ग रो रग हिवड र हार सा जम जाव। तावड माय पान मूक न घूरी बण जाव अर पून र साग उडण लाग जाव। गळी माय आंवत आवत नोगा र माथ पून र फन कार साग घूरी पागडी टोपी माथ पडजा लाग जाव। राहगीर ऊचो देख पण गीव की कोना। पागडी टोपी भडकावता बडबडावता आग चालता रेव। पून फन्कारा मारती बवती रव। हू सोचतो रहू ओ नान्क किस्या है? थारी टक् जणा माळिय माय एक भभकारो मार पान री गुणध रो सुरतो री गध रो। भभकारो बन्तो जाव माथो भरणाईज अर हाळ मी क थारी खोल न पिच करता पीक थूक देऊ।

थोक माय बरतण माजती भाभी रा गरज रा सुर सुणीज। कासी री फूटेडी थाळी सी बा हाको कर— राड कर की। देगर कोनी चाल फोड न्यो चाय रो प्यालो। घर माय एक ही प्यालो बचियो थार बाप न सिक्या चाय पया माय घालस्यू   रीस पमवाडा फेर बा लागगी। आई की गर ही अर उतरथा लागी की ओर माय। झुंझलाहट मू बाल बा लागी— व भी न्स्या गोडीला है जका न चाय प्याल माय माव। टावरा र घर माय अ मारी रा ठीकरा चाल ही कोनी। छारी के वोल? आपर पग री ठोकर सू प्यालो फूट तो ओळमा कम्पनी माथ जाव क घटिया मान निकाळ है थोडी सी क ठाकर लागी क प्यालो दाय दूक। ज कोई दूज र पग मू फूट ता रोड दख र कोनी चाल। आम्या फाडती चाल। फून जासी उणरा भाग ता जका इन ल म जासी। बीरा फूटमी क कानी आ ता भगवान ही जाण पण आ जब र लार आई बीरा सुधरियोडा कानी गीव। बोठ जाण माय ऊपर डाग की मारी है चान जणा

इया मालूम पड़ क रगळा चाल है। जग रो आ दस्तूर है क बडा आप सू छोटा न सदा ही निरमा बताव।

आळ माय रासाडा पोथ्या न जणा छेडू वा माय सू भभकारा उठ। जरद रा भाग रा। पोथ्या रा एक एक पाना जरद री सुग ध सू भरिया हुया। हरक पोथी रो एक एक आखर बोल जरदा जरदा! घडी माय चाबी भरण ताई हाथ लगाऊ ता चाबी कन सू जरद री मिचली मिचली गध आव। हैरान हुयन बारी खोलू ता लूण आळा पनवाडी चिर परिचित निजर सू म्हार कानी दख। अचाणचूक ही म्हार मूडा सू आखर (शब्द) कूद पड—दाय पान निम्ब नम्बर रसी सुरती तज चूना घणी सुपारा। पनवाडी माथा हिलाय न हा भर। जीवणे हाथ रा दोय आगळी दिखाय न पचको कर हूं आर सू बारी ढकू। एक ग रो भभकारा उठ। हूं लुला सास लवण खातर माळिय र बारण कन आयन खडियो हुय जाऊ अर लाम्बा लाम्बा सास रवणी सरू कर दऊ।

सिझ्या पडता ही भाईजी बकनाप री नौकरी सू घर आसी। हासा घासी पण डाल र रग माय की फरक कोनी पड। तल रा चिकणास उतरण सू काळो रग और घणा बदरग हुय जाव दूजो सून्ना डाल घणो भूडो दीसवा लाग जाव। चाय बणसी। थाटकी माय गिलास चाय सू भरीज न आसी। भाईजी रा तवर बदळबा लाग जाव। फूल झडसी। चाय सबडका साग पीबी जासी पण चाय रो सुवाद कोना आव। भाईजा सिल्ला खोडी सभाळसी। दूधिया छाणसी। कम भाळ रो नाम लय सगळा भाग गटागट चढाय लसी। मूडा गमछ सू पूछ न हलो पाडसी अ पाद! ऊपरवाळा भाईजी कन सू आज रो छापा ल्याय देसा क खबरा है! डावडी आगती भागती आसी अर होळ हाळ बोलसी बापू छापा मगवायो है घडी एक न पाछो दय जासू।'

हूं जाणु आ छापा आज पाछा आव ना काल। भाईजी खरा माय रसी जणा रात न दस बजी छापा दवण रा नाम लयन आसी अर चाय पीसी बात बात माय हासमी तरी चालसी। घडी दोय घडी हससी अर पछ नीच जाय न साय ज्यासी। अ न्दास नी ऊगमा जणा राडा राडा गाळया काढसी। सगळा न भाडसा। धू-धा मारा कुटा करसी। लुगाई र मा बाप री सात पीढी रा बखाण हुसी। चूतरी माथ जाय न पड ज्यासी। लाग्योडी माथ तल मालिस हुसी मदा रकडी बाधी जासी। रात अर दिन ओ ही नाटक चालसी। ऊगत सूरज साग आ किस्सा सरू हुसी अर ढळती रात ताई चालसी। अर छापो टसकती भाभी बारसी जगावण माय काम लसी, वा टाबर छिन्या देखन फाड फाड न राग रसा। ओ ही काम बरसा सू म्हार साग चाल। म्हार पछ जका

हा ई माळिय माय रवगा वार साग आ हीं रिग्ता चालसी।

यणा ही दोफारा चाय पीवण री वायढ चाग्गी जणा चोक काना दव सू। कान लगायन भाभी रा वाता सुणस्यू। रात र इतिहास न याद करसू। पूठरा बान रा आभास हुमी जणा जोर सू हेलो पाडसू 'भाभा! चाय काना पीधो के? ज पाछली रात चोखी तरह गुजरी है ता भाभी भागती आसी। नी ता ठडो पड़्तर आसी डाल दूस इ होळ र दरद र लार एक लाम्बो इतिहास रेव। जक न हरक मिनख कोनी समझ सक। आ दरद ढोल रो कोना हुव मन रा हुव। जवा मार भो खावतो रव अर तडफतो ही रेव। इ दरद रा कारण जुगुप्सा सू भरिया है जक न काही समझ सक।

जद कद ही हू माडा आऊ माळिय रो वारणा खालू ता माळिय माय सू जेर सडाध रो भभको उठ भाग रो जरद रो। जी घबराव मिचळी आव। ध्यानणो करू जणा बा मडाध अर ग री हुय जाव। नाक फाटबा लाग जाव। माळिय री आरमा राय उठ। हू सोचबा लाग जाऊ क करू अर क नी? भाभी न देवू। पान रा पीक थूकू। म री छण्योडी लूधिया रा असर देख। जरद र बेग्रास सू माथा चक्कर खावा लाग जाव। हिचकी आव। उल्टी हुवण री नौबत आव। जमडी हुव जणा हू भूल जाऊ के आ भाभी है लुगाई है मिनख है डाकण सा मूडो फाडती दीख जाण मन सगळ न ही खाय लेसी हूँ बीन मारबा लाग जाऊ हाथा सू पगा सू खूब मारू। राडा राडा गाळचा काढू अर जणा बा मन धक्को देव— हू सूख विण सो पट जाऊ। माथा फूट हाथ पग टुट। हिवड माथ चाट लाग। मिनख है कि ढाटा। बापडी औरत न डागर जिया मारू। आ सोचता सोचता निग्ढाळ हुयन पड जाऊ। मन म्हारी दाय छिया ऐके साग दीख। हू सोचू आ हू क बो हू? छिया घूमबा लाग जाव। हू माथा पकड न बठ जाऊ अर कणा हो हूँ छिया लार भागू—कणा ही छिया म्हार लार भाग। इ भाग दौड माय हू उबास्या लवण लाग जाऊ अर मन पतो ही कोनी चाल क मन कणा नाद आय जाव।

कद कद ही भाईजी र अमती ना जणा व निढाल हुयोडा चूतरी माथ पडिया रव। ना ता व खाणू खाव अर नी पाणी पीव। भाभी बीरो चमगूग सो मूडो देख न उग्गास हुय जावती। रीसा बळती बडबडावती सासरा सू तुलना करता पट तो बि या झाली रा कुत्ता ही भर। इ काम माय आरा किस्यो एसान! हार न बा कन जाय न पूछती उठो कानी के! सास लेंवता मुरदे सा भाईजी बोलता हू। इ माय भाईजी रा सगळो इतिहास छिप्योडा है। बी रा एक एक पाना भाभी रा पग्यिाडा है। भाभी फेर भाग

पीम न गाळी खणाय न देवतो । व पाणा मू लवता । थाडो दर पछै भाईजा न चेता वावडतो । जत्त न आधी रात गुजर जावती । भाईजी अर भाभी रा आ मीलण मादियाँ मा सप्ता हा चालतो रव । ई मीठ कडव जीवण माय वाचर रा बाज हू हा । जक न बन ही सपना मिन कर बन नद वासी टुकडा भी कोनी मिल ।

माळिय माय भभरा उठता भाग रा नरद रा । कणा हो दाया रा भभरा एक साग हा उठतो अर बी भभक रा जार अत्ता बधतो क हू रूमाल काट न मार दव नेंवता । आन्या पाट फाड न थाट मर मूणा खाथरा ऐसता जाण भाभी री छिया माळिय री भइ इट माय रमियोड़ी है । लुकमीचणी भी खेल है । भाभी आवता दिसती जावती दिसती खिलखिलायन हसती दिसती अर मार माय न रावती दिखती । कान ब रा हुय जावता । माथो काम करणा बन्द कर दवता । हियाड सामर सो हू निढाल हुय जावता । कण सुणण री बात कोनी रैवती । पीवली मा मठो रवतो । रात सगळी आख्या माय निकळ जावती ।

पार दिन चढया पछ उठता । भाभी आवती चाय पावती । रात री सगळी बात बतातो । अर कवती कै काळ काई ये ही भाई जी बण गया ? रात न घणाई कुचरणी करी ही पण जाग्या ही कोनी । घणी चन्याय ली ही क । जणा मन आखी रात रा किस्सा पाछो याद आवतो भाभी री छिया सारी रात माळिय माय कोनी घूम हा । हू हैरान हुवता । म्हार माथ भाभी र माथ लिलाड माय पसीना आवा लाग जावता । मुस्करावा भाभी कन सिरकती अर कवती घबरायग्या । कान मन मुडा ल आय नै कवती 'धबरायां काम कियाँ चालसी । रिस्ता सगळा ही निभावणा पडसी । हू चकरीबम्ब हुय जावता । रिस्तो एक सामाजिक आवश्यकता है । एक सास्कृतिक धराहर है । आ सगळा सू बत्तन एक आत्मिक आवश्यकता है । सगळी आवश्यकता मू रिस्ता ऊचो है । मन आ दो आवश्यकतावां न छाडन रिस्तो निभाणा है ।

माळिय माय एक सीची लीची गध आवण लाग जावती । हूँ नाक माथ रूमाल राग्तो । घर म्हाणो सायन जावतो पनवाडी माड री कु डो खडखडाय न पाना रो बीडो नाखता कैवता चार पान अलग सू जरद री पूडी ।

जीवती–जूण

बापू ! हू काई भूल सकू जका वाना म्हार साग हुई। व सगळा बाता मन हू बहू या" है पण अब । बगत भागता जाव अर मन जीवण री हर माड माथ धक्का दयन दुख झेलण न छाड दव। हू दुख दरद न समझ न जीवणू चाहू पण वा कठा ताई जाय न ठ र जाव। हू नी ता चन सू जी सकू अर नी मर सकू। म्हारो जीवण र प्रति गरी आस्था है पण हू जाणू क म्हारो जीवण अधर बम्ब माय लटक्योडो है। सगळा पूठ पाछ म्हारी रिगनी उडाव। सगळा बात समभता थका ही हू जीवणू चाऊ अर जीवणू भा सान सू। जीवण र लार ल लम्ब इतिहास माय जणा हू सोचू ता मन मालम पड क बापू ! थारा काळजा बजर सा कठोर हो। थार दरद रो तो विन ह्रा पतो ही कानी चालता हो। अब व सगळी बाता ही रसगी है। हू तो आपरी या" र सार ही जीवू हू। निरासा र क्षिना माय आपन याद कर हू। जीवन–सघष माय सलगन हुवण रा प्ररणा आपस्यू ही लऊ हू। अब अत्ती ता म्हारा सरदा कानी क हू लारला समस्यावा माय विचार कर सकू। थ मान सू जिया अर मन सान सू जीवण रा सदस न्यन आग पधारग्या। हू जणा ही म्हार बार माय साधू बा वेळा हू मन भूल न आपर बार माय साचवा लाग ज्याऊ। म्हारा विचार आपरा भावनावा माय मिलन एक हुय ज्याव। जण थ मन सगा र सूवटा र सार करी ही। जद रो थाडा दीना पसी घर माय काई नाम ही नी जाणतो हा। थोडी बात चात चाली। फोटू आई। हू सगळी बाता छिप छिप न सुणती, फाटू देखणा चावती। पण सरम र कारण की कर कानी पावती। थ मन की अण जाण आदमी रा हाथ पकडाय न बार लार कर दी। थाली बाई सासर र साग हू आपरी छाती माय मूडा घाल न रोइ जण मन पता चाल्यो क आपरी छाती सम दर सी गरी है। आप आपर सगळा दुखान छाती माय दबाय न मु"ड माथ हसारी रसावा राखा हा बापू ! आपरी आस्या र अ तराल रा भाव हू समझ कोनी सकी। पण दरद री छिया गरी सू गरी हुवती जाव हो। म्हारी आस्या आसू ढळकावती ठ रगी। आप मधरा बोल्या बेटी ! तू अमानत है दूज घर री धरोहर है।

आप म्हार जीवण रो दूजा आधार बणायन मन विदा करी। मन घर

रो घणू साच हा। म्हार बाई वन भाइ काना हा जवा म्हार सासर गया पछ घर माय उछल कूद मचाव। आप लागा रा जीव बलाय सक। बापू ! थारा घर खाली हूयग्यो सून घर माय आपरा जीव किया लाग्या हुसी। मोहल्ला परवार री लुगाया रावती आव हा अर ओळमू गावता आव ही। हू वी वळा गीत रा मरम कानी समभ सकी पण आज पता चाल है क वी गीत माय कित्ता गरा भाव हा। हू गठ जाडो जाढ न सगा र सूवट र लार चाल पटी। ई आस अर विस्वास माथ क आ म्हारो जीवण रो आधार हुसा। जिया ई घर माय आई हू किया हा ई घर माय सू लम्बी ऊमर पायन ज्यासू। पण ।
जीवणी रा काळजा फाट हा। समचया फूट ही। पसवाडो फरन पाछी सोचया लागी। लारला वाता माथ जकी काळकी सी लाग ही पण व सगळी आज भूत री हुयगी है। जीवणी आ सगळी घटनावा री गरी चाट सू टूट चूकी है। जव धान मान कर कर न राख ही। जीवणी जीव सो धिणाप अर मरसी मौत आया। दुख दरद री मार सू आ मरी कानी अर नी आग मरसी।

सोच ही' पराया ता पराया हूव अर आपरा आपरो। बापू ! जक री गाद माय बठ न हू बोलणू सीवया। आगळी पकड न चालणू सीख्यो। काध माथ चढन सहर देख्या। वो बापू तो दूर हुरग्यो अर अणजाण आदमी आपरो। आपरो भी इस्सो क रात दिन वीर कन ही रवणू। चुडले र फूद सो प्यारा। आ किसीक विडम्बना है वगत कत्तो तजी सू भाग। म्हार ब्याव र थोडा दिना पछ मा बापू न छोडन भागगी। 4 6 मीना धूळ खाय न पाछी माम कन आय न रयगी। हू घणा राई। मा सू मिली। माम सू मिली। बापू सू मिली पण समस्या रो की समाधान कोनी निसरियो। हार न चुप हूयगी। बापू ! थ अत्ती बडी दुरघटना न पाणी ज्यिा पी ग्या। मूडे सू उफ नी करी।

चालस रा नाम वगत है अर वगत रो दूजा नाम जीवण। जीवण रा नाम जनम है। व तलाव माय गोंठा लगावता मर पूरा हूयग्या। घर माय कुहराम मचग्यो। भीता सू माथो फाड फाड न रोई। म्हारो जीव अत्ता काठो हो क निकळयो ही कोनी। बधाव र गाता साग घर माय बडी ही। आस व धी ही कानी वी सू पली राड हूयथी। खुणू छुडावण न जणा ब आया मन देखता ही थारा पग जमीन सू चिपग्या। म्हार साग धरती आकास रोय पडिया। ब्याव भी लाडा कोडा सू हुया सुहागण भागण री आसीस मिली। अठ तो *भाग फूटयोडा ही हा।*

बापू ! मारो घर छाडणू अर म्हारो रडापा आपन लेय हू या। थे मर तो जक न्नि हा गया हा पण काया रा कष्ट भोगणा बाकी हा। कवरसा री

मोत सुण नै आप धरती माय समावणू चाव हापण नी ता जव धरती माता कन अत्तो सत है आ नी है मीनखा माय। धरती कोनी फाटी पण थ माचा जरुर भ्फाळ लियो। मदमे सू टूटयाडो मिनख पाछ उठ सव कोनी। जाही हालत आपरी ही। आपर माग माय सड मडन मौत रा र तजार करणू लिरयाडा हो।

बापू ! थारा बाग थार सामही उजड गयो। टू उजडत बाग री रुखाळी राखू टू। थारो डील हायो सो हो जको कीडी सो दीखवा लाग ग्यो। मुडे माय बठती मारया मौत सी भारी दीख ही। म्हार सगळ दुख न छिपाय न आपरी सवा चाकरी करती ही। आख मीच न सत्य न झुठलावण री जतन करती ही पण साच ता साच ही हुव।

जावणी पसवाडा फरती जाव ही अर आपर लारल भोग्योड जावण माय सोचती जाव ही। वा जत्ता ही घणू सोचे ही बता ही बीरो जीव तळतळीज हो टाबर पण माय बीन दुनियादारी री जानकारी कोनी ही। समझण लागी जणा पराय घर री हुयगी। ससार रो सुख भोग्यो ही कोनी हा बी सू प ळी छाती माय दुखा रो परबत टूट पडियो। ओ दुख अतो बडो भारा हो जको बीन चोखी तरह हिलाय दी। विधवा रो जीवण ता इ हा हा आपतगारा हुव अर चढती जुवानी माय राड हूवणू घणू ही भूडो हुव। परवार व समाज दा यू डाकी दायी रात दिन आख्या फाड फाड न बीन देख अर मगळी जगह सरी खोटी करता रव। ओठा माय जीभ फर फर न नीरी जुवानी री कमजोरी रो चोखो फायदो उठावणू चाव। आपरा स्वारथ सिद्ध करन दूजरो जमारो ही खतम करणू चाव। जीवणी स्सी घात रा बणियाडी है पण ठावा उठाव अर आपरी इज्जत आवरू रामन भला भला र थपड मार देव। आग सोचवा लागगी —

आ सगळा सपना देखणा भूलगी। सपना दमता ही फिरे ताण। पली ता सपना रो आधार वगो ही आझल हूयग्यो अर पछ थाडो भात रियो आधार सपन दाई आझला हूयवा लाग्या। थाडा दिना पछ बापून आगण माय पसार दियो। मा आई पण चोळो मोडो आई। बापू न चौक माय पसारिया जणा चूडो फोडन आई। पण अव क हुव। हाथ सू गयोडो समय पाछा कोनी आव। सगळी गुवाडो ही बीखरगी। घर री भीता भा राय पडी पण चुप करावण आळा काई नी हा। विधवा बटी अर कमावण आळो बेटा क्य देव। सगळारी भरज पाळनवाली अक्ली हू ही। सगळा कारज करणा पडिया। म्हारी जिम्मवारी अर घणी हूयगी। हू एक जीवती लाम हो जको

घुट घुट न मौत र लार जाव अर भाग भागन सगळा काम कर। घुट घुट न मौत रो इ तजार कर।

बापू ! आपर जावण पछ तो हू बेसक्या हा पडगो। म्हारा तो दो यू आधार टूट गया हा। मोटयार र मरण मू सासरा छूटग्यो अर बापू र मरण सू पी र। डावडी परायो धन हुव अमानत हुव जनम देवाळ मा हूई अर नी हुई बरारार हो। हू मगळारो भार उतार देस्यू पण म्हारा कुण ?

आतम बोध

राजीन रा आवणा आठ घटा रा पूरा नौकरी। ठड ठड ही आवणू अर ठड ठड ही जावणा। पार एक दिन चढता हा घर सू टुरणो अर पी र रात गया पछ पाछो घर पूगणो। सारो सियाळो ढळता रात सू अर सारा उन्हाला ढळत सूरज मू गुजर जाव। यस अर ना रा मबद आगी रात ओठा माथ बिराज। ऐ ही सबद सपना माय सूझ। जीभ आल ग्नि कतरणी सी चालता रेव। इ न सपन माय ही चन नी पड। आखी रात बोलती रव। मन सोपडो मिनख डर जाव। टाबर डर जाव। ओ तो रोज रो घ धा है। घर रो गाडा ई र पाण ही चाल। नी ता कठ हो आवणू अर नी कठ ही जावणू। हाल माय बठा तारा सू रामाण करनी। काना रो क हाथ मिचस्या रेव कानी। रवणू घणू ही चाव पण लोग रवण द कानो। हाय जिया जीभ चालती रेव। सबद कोस माय घणा ही मबद है पण म्हार लातर यस प्लीज ना प्लीज नो रिपलाई सर आत्ता ही सबद है। नूबी नूवी डिक्सनेरिया छप। विनान सारू नूवा नूवा सबद बण। पण म्हारो आ सगळा सू दूर रा नाता ही ना। आख दिन हू सवदा सू हो उठा पटक करू। कान हैड फान मू चिपक्या रेव। कणा तो कीनी सूण अर कणा ही चालती बात न सुण। आख्या भपाभप करती पीळी लाल बत्ती न झाकती रव। माथा मस का सा हिया भरिया उबास्या खावतो रव। आगळया थोडी चूकी क कान मङ खडिज प्लीज रोग नम्बर। हू ला नम्बर मागिया है।

बत्या झपा झप करती रेव। आगळया फटाफट नम्बर लगावती रव अर कान नम्बर सुणण र साग बाता सुणता रव। मामलो होटल र काउ टर सू बठयो बोल— कुण ? हू छाटू बालू हू हा च्यार नम्बर दो ग्यरा नौकरा र हाथा माय बाजती चीणी माटी री छियारी खटाखट सुणीज। हा क केवो ? 10 तारीख न एक मण रसगुल्ला दा बजी चाहिज। तीन सा रो भाव लागसी हा पाच नम्बर न पूडी स जी। छ नम्बर माथ पाणी भेजा हा क कया ? भाव ठीक ही बताया है। आजकाल सावा का ग्नि है पूरा दूध कोनी मिल। दूध रा भाव ऊचा है। आ सावा माय घणी बचत कानी। हू। आप हा जणा हुकारो भरिया है ना ता मीठा उत्तर दवता। 'हा। आठ नम्बर रस

मलाई क्चारी । हा मौ ग्पिया वायन रा, ्व्क मात नाम अर पतो व वगत मगळी वाता लिखन अवार विनाय न्यिा जणा सोदो पक्को हुवेलो । ल्ाल लान्ट चपका मार, 'नम्बर प्लीज । फोरटू थ्रो । ःयस मैडम ।

आगळ्या र साग साग कान खुराफात कर ही वठ । हेलो मिस्टर कृष्ण । यस मैडम गुप्ता । अर काळसिञ्या तू आई कानी । हू ! ' 'कठ गइ ही ।' म्हार माग ही आ चाल बाजी । आ धन्धा क्द सू कर राख्यो है टेम दे र नी पूगणू अर आगल न औग कठ मू खराब करणू ।

नी ! नी ! आ वात कानी ही । डडा माग एक पार्टी माय जावणू पडिया । ममी अवार जजार हो वार गई है । आणा रिंक करी है ।

हा वार फाटक वन पूग ज्याम् ।

हू त्यार मिलूला ।' प्यारिय रा आवाज सुणीज ।

ञ्क साग ही नाइन कटगी ।

मन माय रीम आई । किस्यान वेसूरा लाग है ।

मन राजा है दिल रो । अन्पटी बाता माय फिरक्लो सो घूम जाव । रोगी मू ही फुरसत नी मिल । सरकार रो साल तीकोणू निसान खुण आळ घर सू पूरा मिन । ई माय साल सुत्राई ल्ाग पोते फिर पण घर री भीता वून री चामडी जिया वोक्ळी हुवती जाव । आ भींता माय चूना लाग नी अर मदल रा पछा फिर नी । पट री भाता ही लूखो घान म्वावता म्वावता काळी पडण लागगी है । पट री भीता माथ बिकणासरा पछो फिर हा किया । साल मुआई बधता मुग्याडो निशाण निमान मू गरा हुवना जाव ।

मामना नान्ट थपाथप कर । । स्वा ला ।

कुण मोहन जी क भाव रया ?

दम आना क न्म उ ।

मयर रा भाव रिया न्वरीम ना आना रुख तज है तीम तीम पइसा तजी मन्ा

मी पटो मरीदो । एक हजार सेयर वचा । वजार भाव पाछा भाव मुगताय नाज्यो ।

भाव गिया । वेच्या गिया वेच्या ।

ना आना दो आना) घोटा री घुडसाल सा हाको । हाका ऊचो उठ अर पाछो नीचो पडजाव भाट सो। हा ! हार जीत ! री बात नी । रोकडी अठ नी कोई मर अर नी कोई जीव । ओ मेळो तो ईहा ही चालमी ।

अत न काना माय आव—फट लाइन काट देव । नालायक बठ रा ! लम्बी घटी देवण रो ओ पुरस्कार । नालायक ! खुद री भुझळाट दूजा माथ उतार । पाछी घटी देय न बोली— प्लीज पाताम्टली ।

सोरी । सामै स्वडिय नौकर न कह्यो हा टलीफान माय आवाज आयगी माफी चावू ।

सामै घाव भीत ही हो ।

काना रा पडदा भोपू री आवाज मू फड पडा उठ ।

657 प्लीज । रूप सिह ! क कर है बठ । आखो दिन गवाय दियो। काम कर न काज । तन तो कोई ओळाव चाहिज । आखो दिन बठो-बठा चिलमा फूक । तू गोम्गम कदई मत आया कर । म्हारा निकल्गी अक्ल जणा तन गोम्गम निनायो । तू टक री आदमी नी । गोम्गम ज्यन अबार रो अबार गिट्टी आय जाय । अठ बोळो काम पडियो है ।'

है ! अब री काल चहिय है जणा तू समय ।

सगळा हिसाब कर लई । दस बीस र खरच काना नी दमी ज । आपणू तो काम हूवणू चाहिज

सगळी बात करनी

'हा

'रात न मिल लई ।

वगत मिलसी ता

ठीक है । अठीन ना आव तो कोई बात नी । घर जावण स प ली टेलीफोन कर लइज ।

ओ है मिनख रो मान । आदमी घणू ही स्याणू है । समभदार है । गधा है एक नम्बर रा । कदही काम नी कर बठा गप्पा हाक । सदा ही मनो वाज । गरज रा मोल है गधो हीरा मू मूगो है । हीरा मूत र रेत माय व व

पाडोसण बोली—घणी मरमी ता म्नाम रा टाकरो नी मिल । तनखा पली तारीख न मिल्सी । वसी ही मिलसी जदो लारली न मिली ।

'आपणू जीवण ईंहा ही चालमी हैड फान उतारन घोर सी बोला।

हा ! ईंहा ही चालमा। पावणा जीमता रमी। राडा रोवती रसी

माच ही जीवण रो आ ही हाल चाल रसी। सोच तो सोचण रा टम नी। जैंरदास सोचण रौ टम काढ न साच तो सोच्योडा सगळो गुड गोबर हूय जाव। बीन बव अर बीम नी। अे हाल चाल तो ईंयाहो रसी। सामली वत्ता भपा चप वर पण हाथ माठ ऊटे जिया मिरक ही नी। चाय र प्याल मू उठती भाप मन सू लिपट जाव। मन ऊचा उठतो आव। जणा एक चुस्की लेव। मन ठोड ठिकाण आय जाव। मन भागतो ही फिर। आग लार देख कोनी। माह कन भटको हूव जणा हाम वावड। हैड फोन कान सू लगाय न पूछ्यो

नम्बर प्लीज

हू एक घडी सू नम्बर मागू हू। काई पूछ ही कोनी 873 देवो।

लाइन खराब है। घटी आव कोनी

रीमा बळती टलीफोन गम देव।

टक वर्किंग चाल्ट वेगी वेगी भपापप वर। आगळया कठपुतली जिया नाच। काना री वाम्बी मूनी नी रव। धाधा जमै जणा हिया उचाट हूय जाव।

हलो ! हैलो ! बम्बर। नम्बर 3671

यस। बम्बई 3671।

'महशकुमार बोलू ॥। म्हारा पुरजा भेज्या कोनी।

मुनीम जी सू मालम करू मुनीम जी पूरजो भेज्या कानी

हा। करया।

आदमी रुपया लयावण मातर गया है। आवता ई भेजू।

हा कन्ट्रक्ट म टेक

आव

कलकत्ता 46312

'हा। करावा बात

हा। महेशकुमार बोलू

'आपरी गाठा माय घूड निकळी । म्हान खोटो माल भेजियो । माल हळको है । गिलो है । थारो माल पाछो उठाय लेवो ।

'हाँ । हाँ । आपरा माल म्हारी आख्या रै सामै पक करवायो हा । भूल सू एक आध गाठ हलकी हूसी । आप सगळा गाठा खुलायन देखल्या ।

नी ! नी ! दो तीन गाठा देखीली । अर नी

'आप म्हारो विस्वास करो । माल चोखो ही निकळसी

(मन माय हँस) माल खराब निकळ तो सगळो माल म्हारी पाछो भेज दिया । खराब माल रा बट्टा लय लिया । आपर साग गडबड नी हुवली ।

नी । आप आपरो माल पाछा उठाओ

माल चाखा ह अर नूवा । नूव माल माय सील मालम पड सुखाय न दस लेवा । कम पड तो उजन माय कम कर दीज्या । य म्हार जूना थार व्यापारी हा ।

टेलीफोन री लादन कट जाव ।

मन माय मुळकन फोन रास दैव ।

धान माय काकरा घी माय डालडा दालदा माय नर्वी साड माय लूण मिलावणू अठ व्यापारियो रो सहा धन्धो है । झूठ बालणू व्यापार है । हराम री कमाई लाभ । दिन सगळो ही खरी खोटी खोटी खरी करण माय निकल ज्याव । रात पडता ही गुजर ज्याव । ओ धधो किया चालसी । पर तो दरद्दो है ।

भीत माय टग्योडी घडी छ रा टणका दिया ।

आग नार देख । माड बानी झाक । ड्यूटी आप री वगत हूयग्यो । हैड फोन उतारन बार जाव ।

रात पड ही ।

मोत जेडी चुप्पी

आग्वी जिनगाणी भूग्व मिटावण सारू हा गवाय दी पण आ भूग्व घरी पावण आज ताही नी मिगी। आज हूं वधम हूयन आ री दया माय पडी हूं। आस लगाया पडी हूं क आ बीनण्या माय मन कोइ गोय बगत राटी घाल देव। रोटी तो गोयू बगत मिल पण टम टाळन अर भव भव करन। रोटी खावणू अर धूड खावणू बरोबर है। पट री आतडया भूग सूं मरवा लाग जाव अणा हारन रोटी खावणी पड। भूखा मरता री मगळी रीस भाग जाव। बी रोटी माय नी ता स्वाद हुव अर नी नह। ण कारण जा रोटी खाई अर नी खाई बराबर हुव। किती बडी विडम्बना है। ज कग्मास भूख ही नी लागती ता घुत गाई आ र बारण आग नी पग्यिया रवणू पडता। लाग क्या कर है क मिनख मू रोटी मूगी नी। पण आ बात साचा नी है। राग परवार र बूगा बडेरा मू घणा मूगी है। मजबूरी मू बान राटी घालणी पड। बान टूपो दयन मारियो नी जाय मक। लोगा री लाज मरम र ग्वातर आ काम ना करिया जाय मक। रोटी न तरमता आग्या पथराग्ज जणा जार पाता पाती माय मू काढ आयन थाळी मिरवाय दव। धान रा किती बडा अपमान है कि माय रगायन ग्वावण रा नी मन हुवना मातर ही ग्वावणा पड। विना ग्वाया गिन निकाळण बडा मुश्किल हूय जाव। आडामी पाडामीन बीनणिया री मिकायत कर ग्वा ता पछ जीवणू ही मुस्कि न हूय जाव। घर माय महाभारत रो छाग रूप बण जाव। राटी रा तो साला ही पड जाव। छाती रा भार निया ही मरणू पडमी। आगा जावण छारा री मार मभाळ माय गुजराया अर नूगाप माय मन आरी दया माय रवणू पड। ज कग्मास हू टपो ग्वायन '

दादा! राती मा र ओरी माय बडतो पोता बाग्यो। 'ग्या वेगा ममळना डाकगा बागा— आज ता वोना माडा कर ग्या

मग्राळा हा वगत है

ताडया ता बाळा चडयाडा गीम है आगी र माड मु आवन घ्यालण वानी ग्य न वाली। फूटयोड गाज मा आवाज कान र पडद मू टकगाई आगा गिन गावण न मर। मर न माथा छाड। घर माय ॥ घा मता है आ ता गीं

दीग। ठा पडमी मन की हूय ज्यासी जणा। लारन ग्येय दीना मू मन सिया रवा चने। काल हू मरज्यामू जणा राटी बुण म्हारा बाप पालसी। साग ही ढार र हुकम हुयो— पाणी रो लोटो राख द। भूख लागमी जणा मत ही ग्याय लसा' छोरो थाळी राख न पाणी रो लोटो राखन चल्या गयो। आम्या रा सोजी थोडी ही। छिया तावड रा फरक लागतो हा। कान ऊचा सुणता हा पण डाग का सा वचन कान र पडन साग साग माथो मू भी टकराव हा। थाळी न टटोळता हाथ डोकरी रा पाछा हूयग्या। सगळी भूख मिटगी। डोकरी थाळी पमवाड सिरकाय न पाछी माच माथ उठ न सोषवा लागी

ज बग्गाम आज म्हारो काळजा भरिया हुवतो तो मन आज रा दिन देखणा नी पडता। लोग मन घणी ही समझाई क बीनणी न सगळी भाळावण मन दीज। हूम छतो कन राखज। पण म्हारी राड री मत मारीजगी। जका थोडो भोत लण ग्ण हा छोरा न भोळाय दियो। गणो गाठो बीनणीन दय न निरवाळी हुयन बठगी। अब मन कुण पूछ म्हार कन क है ?

सियाळ रा दिन हा। दिन छोटा हुव अर रात बडी। भगोती खातर रात दिन दोन्यू एक सा ही हा। रोवणू अर सोवणू ■ ग्येय लेख हा विधाना रा निरयोडा हा जका न वा भाग ही।

जाणी पिछाणा आवाज सुणीजी। 'दादी सा सोयग्या काई ?

पगा लागती बीनणी बोली— आओ ! दादी सा। साग छोर न हलो पाडियो— सिमना देख ! दादी जी सोयग्या काई ?

आज भगोती रो मन घणू उगास हा। की सू बात करण रो मन सा हो। आ भायली छोटी तो है पण है घणी स्याणी अर साची बात कवण माय नीरी लाज सरम नी राग। किसनू आयन ओरी कन हला पाडिया।

भगोती पडूतर दियो क आऊ हू बेटा।

डोकरी अण मण मन मू उठ न बोली रो पल्लो ठीक करियो। लकडी रो सारो ल्यन ठावा ठावा पग राखती चाक माय आयन बठगी। बोली— बीनणी। अबक तो बोळा दीना सू आई

काई बताऊ काकीसा ! छगन र छोटक्य छोर न भाव (मियादी बुखार) आयग्यो हो। ई कारण बठ ही आवणू जावणू नी हुयो। बुखार उत रिया पछ कान बीन धान दिया जणा आज माताजी री कडाई करी। परसाद री नावमी लय न आई हू। कनारी दवती बोली—चाव न बताया भूयोडी नावसी किमीक बणी है।

हूं सगळी जाण ही। जक सूं बसी वणा र रयाई। यारा किस्या हीया फट्योडा हा। कय दवता वीनणी पाय नी पीऊला। अवार म्हाणूं गायो है। 'थ चाय गातर मर हा।'

डोकरी रा ऊपरला दात ऊपर रयग्या अर नीचला नीच। बठ सूं बीरो उठणू मुस्किल हुयग्यो। बीनणी आई अर घर माय राड घालगी। मग वग हुयोडी डोकरी थोडी ताळ बठ ही बठी रही। पछ ग्रोकरी आरो मांय आप य सिराय आढन रोवा लागगी।

हूं ब्ताक काळा चाव्या है जका रा बल्लो चुकाऊं। य पुण्यात्मा हा। आपरा काम सळटाय न बगत सर चल्या गया। बीमार पडिया जणा मन समभाई क हाथ काठो राखीज। अ बहू बेटा की काम रा नी है। बगत मर रोटी ही नी घालला। आवण आळो जमानू घणू करार है हाथ न हाथ खावण न त्यार रेवलो। पण म्हारो राड री अक्ल बहू बेटा काढनी। बारी बात नी मानी। ई कारण आज पोदा मुगतू। मन क टा हो अ सगळा म्हार साग ईसी करसी। चार री मा थडे माय मूंडो घालन रोव। छारा तो घाघर री जूआ वणग्या। भागोती सोच ही। विचारा री लडिया टूट ही फर मन ही।

म्हारा न्ता क मोह है क हूं अठ घर माय बीनणी वण न वठ ही पग पसारू। खडा आई हूं बठ सू ही बेटा पोता र म्हान्ड माथ चढ न जाऊं। ज कदास हूं छोटेड सूं अता माह नी राखू तो मन आज ऐ दिन नी देखणा पडता ई मोह र कारण ही मन ऐ दिन देखणा पड है।

कास हूं ई मोह सू यारी हुवती

रिकू

काई जीवण अेक अजखो मारग है ?

नी तो !

नी काई अवखाइया, मुसीबता अर आफ्ता सू भरियोड़ लाम्ब मारग रा नाव ई जीवण है।

मन र हारया हार है अर मन र जीत्या जीत। बाकी जीवण लाबा कठ ? आव र फ्नवण र साग जीवण बात। कई काम अधूरा ही रय ज्याव अर ससार सू विदा हुवणू पड। पछ मारग लाम्बा है ?'

'हा ! इहा दख जणा तो जीवण सूपन दाइ लाग। तो पछ दुनिया यू क्यू केव क लुगाइ रो जीवण विपदाऊ मू भरियो है। भाग जोग सू ज काई भरी जवानी माय राड हुय ज्याव तो सगळा क्वण लाग अब रामजी ही इरा बेडा पार लगासी। जमानू घणू खराब है। ज कठई पग ऊक चूक पड ज्यासी आप रो जमारो अर घर घराण रो नाव बिगड ज्यासी। खुद कठ ही कोनी रसी। इ मू तो ओ ही आछो है क आपरो घर पाछो बसाय लवणू चाहिज।'

सूती सूती खुद ही विमला सुवाल पूछ ही अर खुद ही पडूत्तर दव ही। सगळा सुवाल जवाब जीवण मू ग'रा तालुक राख हा। ठा तो एक पल री नी पड पण सोचणी सौ साल री पड। दुनिया घणी स्याणी है। पगा बळती नी दीख पण डूगर बळती सगळा न दीग। करियो काई जाव। विमला र क्याद मैर ग रा अधारो हो। बी माय की नी सूज। पछतावती बा इ अधार माय आख्या फाड फाड न मारग जोव ही। सिया मरती रिकू न काठो छाती सू लगावती जाव ही। मा री सगळा ममता सीमा ताड न रिकू माथ रळक री ही। विमला नह भरियो हाथ होळ हाळ रिकू री पूठ माथ फर ही। रिकू सनह री सीतल छिया माय निधडक नाद लेव हो। विमला फर सोचण लागबा लागी— म्हार जीवण अर घोर अधार माय की फरक कोनी। इ अधार माय सूरज री किरण चमकनी मुस्कल है। मन तो आगा जीवण इ अधार

माय हा माटण् है। निरामारा सास छान्ता बडुबडाई— मन म्हारा आगा तर चाहे सुधर था बिगड पण न लन रा ता भविष्य बणारण् है। हू आस जीवण राखती रस्यू पण ईन नी रोवण दयू। माचण र माम साग धीनडिय रा पूठ माथ हाथ फरती जाव ही। जाण रिंकू री सगळा विपनावा हाथ र सार सू उतार उतार फक ही।' चि ता पक्त रता है व क्ठ ही म्हारा नासमभी सू ई रा भविस नी बिगन ज्याव।

विमला साच हा म्हारो माटयार ता मरग्यो। अर न विचार र साग ही विमला र हिय माय हूक उठवा लागगी। बा गूनी नी रय सकी। तिस मिलाय न उठ वा लागी। पण रिंकू विमला र गळ माय बाथ घाल न सूता हा। बो आपरी बाथ अर कडरी करली। हिवड री pक पाणी बण र आख्या सू निसरवा लागगी। जळ जळी आख्या माय एक माटयार तिरवा लाग्या। बाल्या— बस ! हिम्मत हारगा ! काई तनै थार माथ विस्वास कानी ! आ दुनिया है। धन्पाड न हम अर पाठ न भी। न रो की सू ही नातो रिस्ता कोनी है। आ ना तो बुरा माथ अर नी भला। पाणी ज्य आ रग हीन है। आ तन थारा विचारा जिसी दीख। थारा विचार आच्छा है ता तन दुनिया आछा दीवसा माडा है तो माडी। थार नव जीवण री सरूआत है तू घबरायगी।। दुनिया न दख व परख। सगळा चाजा दीख जिसी नी हुव। काम पडसी जणा फरक निजर आसी। ण वास्त विवक री निजर सू देख। सगळा रा गुण अर समझ न काम कर। ना ता जीवण आवा हुय ज्यासी। ।

इ र साग ही विमना री आख्या सू माती ढळक न तकिए माथ बिखरवा लागग्या। जावण रा मारग कित्ता लाम्बा है अर दिन कता छाटो है। मिनख रात दिन धाणी र बल जिया साग्यो रेव। पण पाछा नी देव।

विमला आमू ढळकावती जाव ही अर रिंकू री पूठ माथ हाथ फरती जाव ही। अ धारा वारण् तोडम माय आवतो जाव हो। सारल दिना री बाता फौर फौर न पाछो आम्या आग आव ही। विमला अणचिन्ती बाता माथ विचार कर ही—घर आळा दिनूग बेगा ही उठन पढण लाग ज्यावता। पछ पन्हावण सारू ज्यावता। दस बजी घर आयन खाणू खायन स्कूल जावता। स्कूल मू छून्ता ही पाछा पन्हावण सार जावता। पौ र एक रात गया पछ घर खाणू खावण न आवता। पछ आप पढण सार जावता। रात न दस सान्ती दस बजी पाछा आवता। रात दिन चकरी बम हुवडा चालता रता। छुट्टी छप्पाटा न घर र रामन पाणी भेळा करण माय गुजर ज्यावता। सासू कवती बटा।

रात दिन लाग्यो रेव। थांडा आराम कर लिया कर। दाळ रोटा भगवान दव है। आपण किसी डावडी कुआरी बठी है जक यू इत्ती मचळ कर।

व हस न पडूत्तर दवता—मा ! थारी आसीस चाहिज। घर बठा रा गाडा जुड ज्यामी। रात दिन हाथ-पग चालता ही रणा चाहिज।

'अर ! बटा ! थारो बापू डाकरा कवनी— महनत करता करता म्हन भा जुआनी माय छोड्या। व जिया जठ ताई आपरा फरज पूरा करता रया। पछ म्हार माथ भार छाडग्या जको हू उताहू हू।

विमला पसवाडा फरबा लागी ता रिंकू काठो पकड ला। रिंकू रा एक हाथ हाथल चूसत टावर दाइ विमला र हाचल माथ हो। रिंकू हाचल चूसना ता छोड दियो हा पण हाचल रा नह हाल ताइ हा। विमला फरू सपना दलवा लागगी— रिंकू वान्को माय चूरमू खावता थाडा अर खिडावतो घणू। कणा कणा ही बिखरयाडा भारा चुगन खावता अर आपरी दादी र मूडे माय दवतो। दादी अपार आनंद माय हूयन धिनडियन छाती लगावती। एकादमो र दिन दादी मूडा नी जूठती जणां बा विमला कन विनाय दवता। रिंकू री नटखट प्रीत दखन विमला रा हाथल गीला हूय ज्यावता। विमला नीद माय पसवाडा फरिया। रिंकू पूठ माथ टटाळबा लागग्यो। विमला पाछा पसवाडा फरन रिंकू न छाती सू लगायो अर आपरा हाचल कञ्ज माय सू बारन रिंकू र मूड माय दियो। रिंकू आदत मुजब मूखा हाथल चूसबा लागग्या। मा री ममता रो घरो रिंकू र असवाड पसवाड घूमबा लागग्या।

विमला पाछी सोचबा लागगी —अणा वी री आस बधी जणा सासू न कता हरख हूया। सगळा दवी दवता री गठ जोडे री बात बोली। ज कदास बा म्हारी चाल्ती तो फट टोक दवती। बेटा ! अती खातावल क्या री है सावळ चाल। हू मन माय सोचती माजी जूना विचारा रा हा। बारा मन राखण खातर चुप रवती कह्या मुजब काम करती। आ जद हूया डाकरी गुवाडमाय गुड बाट्या।

माजी ! इतरा खरचा क्यू करो लाग कह्यो।

'बटा ! बोना बरसा पछ' डोकरा बाली— 'बडेरा र भाग सू घर माय थाळी बाजी है। आज ता करू जतो ही थाडो है खरच कारण आलो दाता है। म्हारो क माजनू है।'

मगार री मावा रा ेच्छा जिया डाकरा घणी ही चावै ही क बटा पाता गाम्ट चड र जावू। पण भाग री रेखा कुण जाण। रेखा माय मेख कुण मार। बी री आन्या आग बगा पग पमार दिया। डाकरी भीत सू माथो फोडवा लागगी। करियो क जाव विधाता रा आक टल कोनी अर मौत र आग किणी रो जोर कोनी चाल। एक सारो पला ही छिन्काय दियो। जणा डोकरी बेटे री आधार मान न आप रा बिल रा न्नि काढण री साची। काळजो बजर रा बणाय न टाबर न पाल्यिो। भरी जुआनी माय विधवा हुयगी। गोट रा लटन पाळ पास न बडी करी। पढाय लिखाय न ब्याव करियो। लोगा न क्य सुणन नोकरी लगाई। डोकरी आपर बिप रा दिना न भूलगी। रिजू र हुवण र पछ तो डाकरी रा दिन राम राम माय गुजरवा लागग्या। हुणी न कुण टाळ सक। एक न्नि आपरी आलाद ही मझधार माय छोडगी। डोकरी हिम्मत नी हारी। बहू अर पोत न छाती सू लगाय लिया। वगत र साग छाती रा घाव भरबा लागग्या। मुख रा न्नि आछा हुव अर बिख रा दिन लाम्बा। डोकरी रा गोडा टूटग्या पण बा हिम्मत नी हारी।

विमला रो पी र जावणू जावणू सरू हुयो। नारला घाव भरीज बा लागग्या। बाप रो सारा अर डोकरी री आसीस टूटत परवार न सभान राख्या हो।

होळ हाळ मायता र अठ नवी बात हुयवा लागी। विमला र साम बाता आबा ला गी। हुवण आळी बात तो हुयगी। अब फर घर बसाय लव ता चोखा रेव। काल न पग ऊक चूक पड ज्यासी ता परवार री नाक कट ज्यासी।

विमला आ सुणता हो बिखरगी। सोच बा लागी-- काई म्हारा जीवण अता सस्ता है। हू जग्या जग्या भागती फिरू। मिनख र साग सावती फिरू। मिनख किता ओछा हुव। टाबरा न पालण खातर दूजा ब्याव रो नाव कर। ब बडा ही आछा हुव। क सी की कर सा की। मन राजी राखण खातर आपरी प ली लुगाई र टाबरा न मारसी-कूटसी। का बा र नानेर भेजसी। म्हार टाबर माथ ऊपर स्यू नेह दिखासी पण मायल मन सू दुतकार सी।। बम राखसा। साग सावण रा वात करमा। म्हारो सगळा मार साग सावण रो हुवला। काई हू अती फालतू हू। मावण खातर सरू हू। म्हारा जीवण रा आ ही माल है। नी! नी! हू को करूनी। म्हारा जीवण निजू है। वो माथ की रो ही अधकार नी है। डाकरी जको म्हार म घणा आसा राख। थोरी जासा रो आधार रिजू है। वो न हू लावारिस जिया सन्क माथ ना फेंक सकू?

जका र वस न हू पट माय राख्या। म्हारा दूध पायन पाळ पासन पगा चालण सातर खडियो किनो। अब वीन धक्का दयनँ पटक दयू। नी आ नी हूय सक। वा[1] वा म्हारो अस है। एक री अमानत है। डोकरी रो सारा है। म्हारा जीवण अता सस्तो कोनी। हू विस्वास दियो है अर विस्वास लियो है। विश्वास घात की कर सकू। डोकरी न धक्को दयन मौत र मूडो माय नी धकेल सकू। हू म्हारी कूम न लावारिस छोडन नी भागू। रिकू न पाळ पासन वडो करस्यू। मिनख करस्यू। खुद कमास्यू अर दाग्गी पोत न पाळस्यू।

जीवण री आस्था

जर आ जीवण कित्तो लाम्बो है कित्ता अटूट है। मन सगळी जग्या समझौता कर र न चालणू पड। काई म्हारो जीवण एक समझौतो मातर है। का हूँ समचौते री गाठडी ढावण खातर ही जनम लियो है। समझौतो छोडन म्हारो की अस्तित्व ही कोनी है। का हूँ आ कय सकू क हूँ जीवण अर समझौते री बीचली ग्डो हूँ। ज कदास विरोध करू ता सगला मन उठाय न बार फक दसी जिया किवणास माय सू माम्वी। आधो सूतो आधो जागतो जग्गू साच हो। बीरो सोचणू अत्ता ही साथक हा जत्ता बीरो जीवण। भरी जुआनी माय लूलो हुवण पछ जग्गू खुद हो जीवण सू मन मू आ क हो जाय सक बो इ ससार सू हो लूला हुय गया है। पगा सू बकार हुवण र साग साग मान इज्जत मू बेकार हुयग्यो। ाग रा मार र माग साग लिछमी री मार भी पडबा लागगी। राम रुठया पछ सगळो ससार भी रुठबा लागग्या। उपक्षा धणा झिडक्या बार बार री टाब सू बीरो मन सागीडो भर ग्यो हा। गरीबी अर घणा दालडी मार सू जग्गू अत्तो उथकग्यो क मौत रो भायला बणणू चाव हा। पण मौत भी सुग्न जिया जग्गू मू आटी पाटी ल्यन सायगी। जकी बीरो सुध बुध नी लव हो। जग्गू रो मन जग्गू न छोडन भागतो जाय हा।

जग्गू सूता सूता सगळा न भागता देख हो पण बो किन ही क ानी क्य सक हो। आज बा पडताल है ग्यिाडी रागी खाव है। पडताल आदमी माय नी ता बुद्धि हुव अर नी समझ। सरीर सू समझ सू जका निमलो हुव बारी कठ ही जरूरत कोनी हुव। ना इ गमार माय नी बी समार माय। ईस्य पासतू मिनख न मौत रो बुलावा भी नही आव। सूत सूत जग्गू री कमर दुग्ग बा लागगी। पसवाडा फरण रो जतन करिया पण पसवाडो फरियो कोनी जाय सक्यो। इ परजतन माय गोडा गाभ माय सू बारे निकळ आयो। बीन देखता ही आरया माय सू चौसरा चाल बा लाग्या। मूडे माथ हाथ फेरिया तो बध्योडी ढाढी माय अणमाल माती बिखरोडया मिल्या। ओ रोवणू तो सगळो जिणगानी रा है। इ कारण आस्यारो पाणो भी सूखबा लागग्या है कत्ती अजीब बात है जका मिनख काल ताही स्याणू अर समयदार हा। आ ासो

पाडोसा बूझ न बात करता। सलाह-सूत करता अर आज बो ही मिनख बकार है। अवको ह। करतार ! थारो खेल बडो ही निराला है।

जगू इ कोठडी माय लारल कई बरसा सू है। सगली भात रा दिन इ माय गुजार दिया। जीवण र निरमाण री सरू आत भी अठै स्यू ही हुई। दिन सारा आया जणा चमक दमक आई अपणायत आई। अ सगळा सुख जिया आया बिया ही पाछा चल्या गया। पण आज । आखो रात तिल चट्ठा बिस्तर र सार सार फिर। खटमल सारा रात खून चूसै। अत्त न कोटडी रा बारणू हडबडीज न खुल्या।

कुण

जा तो हूं हूं

दरसण कर आई

हाँ

इ क साग हा लटटू चम ग्या। कोल्डो च्यानण मू भराजगी। वजा उमम है आग बोली–एक दो दिन माय विरखा आसी। आ कवती पाणी री मटकी कानी चाली अर बोली–थ पाणी पीस्यो क

'हाँ

सरबा छळन पाणा पिया अर छल न जगू कानी चाली। साम देखन जगू पूछयो सुवला वठ !

नीच ही रयग्या उपक्षा भरन बा पडूत्तर दियो।

। एक दन्याडी जळन हुवार साथ निसरी। पाणी वठा नीच उतरग्या जणा इहा मालम पडियो क एक गरी ठड काळज माय समाइज हैं। पण आ ठड पल माय ही पूरी हुय ज्याव। मन आशा रो आधार लाजता फर पूछ 'छोरी हालताइ कानी आइ ?

सगळी झुझलाहट एक साग हा फूट पडी। बोली— आय ज्यासी। बी न कोई लाव है क ? माडो बगा आवणू तो बीरा रोज रा हा धधा है।

आसा एक साग ही मुरझायगी। जीभ बडी चालू है। जठ बीरा काई काम हुव बा लळ-लुळ न बोल। जट काम नो हुव वठ तुम्ब जिसी वेडा हुय ज्याव। सामन माथ डाग सी मार।

जगू र मुड माय मुरदानगी छायगी। बरसा मू बीमार सा, मुडा पाछा पडग्या। निढाल हुयन जगू पाछा मुडा फर सायग्यो। कोटडी माय

मोत सो ॥ नाटा छायग्या । बा आ सगळी बाता न रद्दी कागज जिया उडायन हुताइ करण सारु बा'र चली गई । पण जग्गू र डील माय एक साग ही सा सौ जुआला मुखी फूट पडिया । आसू रुळन जळन मिटाबा लागग्या । आ उपक्षा आ घणा रोजीन पाणा दारू पीवणी पड । कणा आम सामगी पता ही कानी चाल्या ।

पाछा नीद टूटी जणा मालम पडिया क छोरी दफ्तर सू आयगी है। कपडा बदल न सडाम गई है। बी री मा छान छान बी रो मनी बग सभाळ है। मनी बग माय मुच्योडा नोट आपर भाग माथ राव अर बी री मा र मुन्ड माथ चमक दय । पण इ चमक माय एक घृणा है लालच है। लुगाई कत्ती स्याणी हुव । बीन की माथ ही विस्वास कोनी । अठ ताही आप माथ भी । मा बेटी सू छिप्योडी कोनी अर बटी मा सू । घडे जिसी ठीकरी अर मा जिसा डीकरी । मनी बग पाछा हा रुकन राख दिया । आस्वस्त हुयन सागी जग्या आयन बठगी । घाली र पल्ल सू मूडो पूछयो जाण आपरा थारी उतार न फक दी है। ई कल्पना सू ही जीव मोरो हुयबा लागग्या । आ बात कोई आज ही हुइ है इसी बात कोनी । ओ राज रो घ'घा है । दा यू इ बात न जाण पण समझ राखण कारण चुप है ।

छोरी सडास सू आयन हाथ मुन्डा धोया । खाणू ऊत्त निरलव भाव सू खावणू सरू करियो जिया कोई वगार काढ है।

रोटी चाखी कोनी क ?

चाखी ही है।

फर ईया किया मान ह ?

आज भूख थोटा है।

आज थोळा माटा कर दिया ।

तन बठी वठी न लाग । रोजीन रो ही बगत है। खाणू खायन रकाबी धाय पूछ न राखी । पाणी पी न जग्गू सू हताई करण लागगी। थोडी ताल हथाई करन नाइट लम्प जलाय न सोयगी ।

डीकरी जत्ती ताल जग्गू सू वात करी बा वगत बडा ही सोरा यतीत हुयो । जग्गू रा दुनिया माय आस्था अर विस्वास जम्या । आ दुनिया माय घोचो ही नी है भला मिनख भी है। जका रा काम भलाई करण रो हो । इ ससार माय सगळा मिनख कूडा अर धोखे बाज हुवता ता आ दुनिया ना चालती । इ ससार म सगळी भात रा मिनख है। चोखा भी खोटा भी।

मगळा न पिछाण लिया। मरीर सू तो कपड़ो वरी हुयग्यो अर मु ड स्यू अ न। आडा न्नि मिणम री परीक्षा लवण साम्ह आव। कार्ड हू हार मान जास्यू? नी! श्रे बीत्या रा न्नि आज नी तो काल कट ज्यासी। ज हूँ हार मान लेस्यू तो ओ ससार मन आगळया माथ उठाय दसी। हू पगा सू लाचार हू। पण मन स्यू नी। भगवान मन दाय हाथ न्यिा है बुद्धि दी है। हू मतत मयथ प र स्यू। घर मिनरा वणन जीवण रो जतन कर स्यू। हाथा मू म्हारा भाग बम्नन रा जतन करस्यू।

आ सोचता मोचता घणा जग्गू न मीठो नीन्द आयगी पतो ही कोनी चाल्या।

लैम्प-पोस्ट

म्हें फालतू समय काटण सारू का आ क्य देवो के सिझया पड़िया पछ, तपस दम पोटू घुड़माळ माय जीव घबरावे बी सू उब न मडक माथ सूण कन लाग्योड़ी बत्ती र नीच आय ने खड़ियो हुय ज्याऊ। जठ ताई नड़ियो र क के पग थकन पणिहारो नो गावा लाग ज्याव अर आंख्या नींद र भोट सू मींवाज वा ना लाग ज्याव।

म्हार कन थाड़ी दूर माय डासा बणावण आळा मराठी खड़िया रव। मादा, ममालादार कई भात रा डोमा बणाव। बणाय बणाय न एक र माथ एक राखतो ज्याव। डासा बणावता ज्याव अर च्यारू मेर देखतो भी ज्याव। अचाण चक कठ ही मामू आयन पकड़ नी लेव बीरी आंख्या रा कोया अर हाथ री आंगळ्या एक साग ही नाचती रव। गाहक आव अर साग ममाल रा डोमा खाव कणा कणा ही तो अत्तो वगत ही कोनी मिल क सगळान एक साग डोसा दिया जाय सक। क्या न थोड़ी ताळ मुश्ताणू पड़।

मडक माथ मोटरा फर्राट स आवती जावती रव। मान्रा माय बैठा मिनखा न मरण री फुरमत कोना। अ न्यास मोन साम आयन पूछ ता पड़ू तर आ ही मिल क फर आजो अवार तो फुरमत कोनी। पण या आव जणा किन ही पूछ बोला क किन्ह ही वगत है क कोनी।

हाथ गाड धक्का खावता चाल। गाडाआळा एक र पछ बीजा पग ठावा राख राख न उठाव गाडा खीचता आग चाल अर लिनाड माथ आयोड़ पसीन न फालतू चीज जिया उपला सू धाती माथ फक अर आग चालता जाव। व चार जण इहा मालम पड़ क ज डग मगावता धरती ल ठावी राख। पण बारी आ महनत पट सू भारी अर सत्तू र सुवाद य जीवण सू सूगा पड। आ मिनख दा या र बीच डग मारतो चाल। नी चाल ता क कर। वा भूख्या मर का कुओ फागी कर। वा चालता रव अर पट रा माग चुरावता रव।

मडक र खुण माथ मनूस पालिकी री कचरा गाडा खड़ी रव। रात दिन बी माथ माख्या भिण भिणावती रव। कई मगता जका भूखसा भयकर नाग

ग्याद माथ बारी नाख्या हाथ माय लोहे रो काटा लिया आव अर भूखे भेडिये सा कचर गाडी न दस अर काटे सू कचर न बिखेर आपर काम री चीज वोरी माय घालन परमहुस सा आग वीर पड। दिनग सिंझ्या र सत्तू रा जुगाड करण सारू आख दिन कचरा गान्दी न टटोळता रव। आ मिनखा र डील मू एक ग्यो भभको उठ जक मू कचरो आपरो नाव ढक लेव।

म्हारो मन आन देख देखन ही घबराय ज्याव। ध्यान बटावण सारू हू थोडी दूर वठयड सीग चिणा आळ कन जायन दस पिसा रा सीग बिळा ल ऊ। एक एक दोय दोय चीणा ग्यावता र ऊ। छाती माय आयोड भार न तो किया ही सिरकावणू पड। होळ हाळ आर सिरकता जाव ओर वत्ती रो च्यानणू ऊजलो हूवतो जाव। वत्ती रो च्यानणू उत्तो मचनण हुव क मु ट माथ लाग्योडो पाउडर दीप दीप करवा लाग जाव। गौरी तो गौरी नीग्र पण काळी भी गौरी दीखवा लाग जाव। भळको मारवा लाग जाव।

इस एक पावडा दूर सा बाबा रा मीनर हा। मिनख लुगाई टाबर सगळा दरसण करन आव। वणा ही भीड बन कणा ही छीड रेव। ओ ताता पौर एक रात गया तक रेव। मीन्दर र सार एक गळी है। जकी माय मू लुगाया ग्याती खाती जाव सडक र दा या कानी देख। जाण पिचाण रो नी दीख तो सीग चीणा बेचण आळ कन आय खडी हुय जाव। आपरो नम्बर याद दिरावण रो जतन कर। सीग चीणा वेचण आळा मिनख घणू स्याण है। वोरी आगल्या की कर अर आख्या की बंद।

ग्राहक आया क कोनी का ख़ार गया का पाछा आवण आळा है। कती ही बाता एक साथ केव। वो री मन व ही समझ दूसर र तो पल्ल ही नी पड। सगळा बीन घेर न गडी हुय जाव। चीणा लव। एक एक दाणू सीधो ही जाड नीच जाव हाटा री ताली र अडे ही कानी। मारली जाट भी ताकसी रच क चीण रा सुवाद बिरयोत है। हाठ तो आपम माय मिल नी कोनी। कठ ही ताली बिचर नी जाव। अत न टकसी आय न रक। मिलनमार झट चाणा मनी बग भाव घाल न फाटक कानी चाल पड। होळ सीक माटर रो फाटक खुल आ पग धरती पाछी चाल पड। थोडी ताल आ ही क्रम चाल। कई आव अर कई जाव। कइ जण्या रा वादा पूरा हुव अर कइया ग ला अधर माय यूलता रव। व हार न पाछी मुड जण्या टट वा न जाव। ओ ससार है। दण लण वादा खिलाफी म्हा ही चालती रेव। एक आवश्यकता रो वादा है। दूजी जण्या पूर्ति रो नाम खिलाफी है। ससार रा झझट ओ ईया ही चालसी। ई माय कौ फरक कानी पड।

घटी माय एक आ आग मोचणी रो खेल चालतो रव। हू मून दमक सा ई सगळ नाटक न देखतो रहू। निजर मिल। होठा माय हूलकी मुस्कान फेन। नूई खिनाडी निजर नीची कर न व। जे अठ नी गडिया रेन तो क वरू छाती मायनो नासूर ता रात दिन कुळना ही रव।

मोटरा पाछी आवा लाग जाव। ठर कर अधार माय ही। फाटक खुल एक पग बार आव सगळा डील मोटर कानी झुक। एक वडी नूठ अर कर। अठ देवण साह तो राम जी रो नाव हुव पण नाटक ता पूरा ही रच। मोटर फराट मू भाग जाव। पगा सू ईहा मालम पड के सत ही कोनी है चूस्योडी कडरी मी चाल। मनीवग रो पट भारी मो लाग घीगाण ठूस्याडा नोट आपर भागन रोव। पण हूसरे र भागनै बणाव भी। ओ घ घा ईहा चालमी चालतो रमी अर चालतो रया है। की फरक कोनी पडियो है। फरक मिरफ मना रो पडियो है का वात रो।

रात वधती जाव। सडक खाली हुयवा लाग जाव। सीग चौणा आळा ढासा मणाकण आलो जावण री त्यारी माय लाग जाव। कुली मजदूर घाटी आप आपरा तपड नयन आयवा लाग जाव। फुटपाथ न सडक न बुहार। इसा मालम पड क ज धरती न रग महल ममम न सोवण री त्यारी कर। दिन माय जकी सडक मोटरा र भार मू टूटता ही वाही रात न मजदूरा न घाटया न कुत्या न रात वामा देवण माऊ त्यारा करता लागगी है।

अ मिनख अ मिनख जिनावर सडक रो ही विभाजन करन राख्या है। घू मामा घू मामा री जग्या मान न तप्पड विछाव। काम सू टूटयोडा मिनख पडता ही नीद लवा लाग जाव। भाग री विडम्बना भी वत्ती टेढी है। काई नीद लवणू चाव पण वीन नीद कोनी आव अर कोई नीद रा मारया सडक माय ही पड जाव। आ सगळा जीवण है रोजी न देखू अर देस दखन समझण रा जतन करू पण म्हार पल्ले की कोनी पड। हार न ममाजवादी समाज र विभाजन न स्वीकार करू अर मी ग्रेट र होटल माय जायन आडर देऊ। सिगळ चाय अर दा पाय। आ विभाजन भगवान रो है क मिनख रा है। की कोनी ममझ पाया। पण अत्ता जरूर समझ पायो हू क मिनख जिनावर माय फरक है। माठ पडमा रा हरया हुय जाव अर मन माय डिनर रा स्वाद लयन चाळ कानी चाल पडू।

गोला कन आयन ताळा खोलन वारणू खोलू। लट्टू जगा ऊँ। च्यानणू हवता ई तिलचट्टा चमगूगा हुयन एक साग भागम भागम मचू कर। खूण माय जायन डगा जमाय लव। बपडा खोलन पछियो बाधू। मच्छी माय मू नोगो

छळन पाणी पीऊ। माचे माथ वटन कामा ताहो सुग दुख गार भागू। म्हारी गत ता आन भोगता भोगता गतहीन हूयगी। सेनी त्यार करन दांत सार रासू। खूब माय एक आध पीक यूक्। लटट् बुभायन माचे माथ मोवण रो जतन करू। म्हारी गोळी म्हारी भूत अर भविष्य दाही आधार गुप है। हू ई अधर माथ एक भूत सो पडियो सोचू जीवण अर जीवण रो मोल। आ सोचता मोचता आम्या नीन्द माय गळीजवा लाग जाव।

—

मौत री दस्तक–अमूजतो जीव

'विस्वास कोनी'

आ वात कानी। अनुभव री है

ता अनुभव आ ही बताव क

आ [illegible] कठ कहू ओतो म्हारा विस्वास है। आ वात ता छाटीसी है पण इन अता तूळ क्यू दवा हो। थान ठाह म्हारो जीव घबराव। थाक लार आया पछ नी ता ताता मायो अर राता ओन्यो। आम्बा जि दगी लडता ही रया। काम किया तो क्यू अर नी कियो ता क्यू नी ? सगळी जि न्गाणी यू ही गुजार गी। भाग फटयोडा राडा रडवा मान सुवाई हुयता रया। मन जीवती न ही वायली। अणा म्हारी उठण थठण री मरजा कोनी री सगला मन्ना हुयन लखण माऊ आयग्या। कठही हू मोर साम मर नी ज्याऊ।

तू ता उरटी पड है आ कठ केव ह

'आ नी तो पछ क केवा हो

काळवल गजी। मिनख चुप हुयन दरवाज कानी आया। सठान खडिया दखन मुन माथ मुस्कानरी रेखासा गेडाई। चिन्तनी ग्वाल्न कमर रो वारणू वाल्यो। घर धिराणी रा हाल चाल पूछया। सगळी बीमारी माडर बताइ। फिर फिर मन मू दवाई पाणी न्रियमजी अर अत्तार कि की दवाई चाल है। सठ घणो चिन्ता प्रकट करी। तकलाफ रा दिन है। भगवान रा भरोसा राखो ऐ भी निकळ ज्यासी। रामरमी कर पाछा पधारग्या।

मिनख क कर। नाक राखण माऊ समाज मू डर जीवण वास्ते रात दिन बल दाई पच पच मर। घर रो रुतबो राख अर काळछा थोयो कर। लुगाई मू लडता अनोम पनोम माय मानस्या जाव। समभाव बिन अठतो अकल मू नह रो रिस्तो ही कोनी। सगळा वात मन मन चक्र मू पिण्डो छुडाय न चुप न्य ज्याव। छातीरा घमीना छानी माय ही ऐवता रव। इस्या हा जुगतसिहजी पण वारी घरवाळी वारी वाई वान सुण ही कोनी। ज कदास भूल मू बीन अणणू आवण रा केय देव ता वा आयणू ही ज्यासी। दुनिया सारी

दव न जुगलसिंहजी समझावणू व दफ्तर भ्यिा अर गृहस्थ री गाडी राम भरोसे छोड दी। हुवणू है जका हुयसी।

जुगलसिंहजी री घरआळी स्याणी ता कही जाय सक पण गूगी कोनी ही। काठीजती क पिस्यो छदाम हुयन हाथ सू निकळ। पाली दतो क दाय मिनट रामराम करयान मगत न रोटी दय दव। आ कह्या जाय सक क लारला भिन तकलीफ सू गुजरया अर बुढापा माय रामजी री किरपाहुयगी ई कारण दो या रा घन सू घणू मोह हुयग्यो हो। दाया री स्याणप ही लडाई रो मूळ कारण हो। रामजी राजी हुया पळ घरधिराणीरो नरीर साथ कोनी दियो। ज्यू ज्यू धन बध्वा लाग्या वा घणी बीमार रवण लागगी ही। भागरा खल अजब है। मिनख धार ऊसार स चाल। पत्नी ता आस व थी कोनी अर जद पट खुलवा लाग्यो तो पाछा थ द हुवणू रो नाम ही नी ळव। पचासी ताही सात मुवाई टाबर हुवता रया। चार जावर ही जिया बाकी ग पाछा हुयग्या।

जुगलसिंह जी घणा ही स्याणा हा। 5 6 ताही छोरिया पढी वान मनटाय भीनी। छोरार दसवा हुवताभी परणाय दियो। काम घ ध लगाय दिया। छोरया आपर मासर चली गइ। टाबर आप आप री लुगाया न लेय गया। दायू जणा स्याणा हा आपकन अळघत कोनी राखी। ळम्बे चौड मकान माय व नू ब ती दाय जणा रवता।

नरचो न वरचो। नाम पकावता दाय खावता। वासी रव न कुत्ता खाय।

बरस गुजरता गया। दायू जणा रात दिन लडता रवता अर बगत गवाता रया। जुगलसिंहजी रा रूतबो बढतो जाव हो अर घर माय लाग्योडी बीमारी ठीक हुवण रा नाम कोनी लेव ही। दूर रवण सू टाबरा रा नह टूटता जाव हो। बरसा ताभी आपर पोता पौती रा मु डा ही कानी देव पावता। हारी बीमारी माय कणाहा किन कणा ही किन तार दय न बुलावता। दा च्यार दिन रवता। कामरो नाम स्यने पाछा चल्या जावता। लार रवतो वडा सारा मकान डाकरो डाकरी अर अ तहीन लडाई।

भाकरी लारल कई बरसा सू बीमार चालही। लम्बी बीमारी चिडचिडो सुभाव अर बम भली भली लुगाया रा विस्वास डिगाय देव। ज कन्ही जुगलसिंहजी डोकरी सू ना बोलना ता झगडा हुवतो अर घणा बोलता तो झगडो हुवना। डाकरी र भ्लि माय बम बल्गियो क जुगलसिंहजी रा मन म्हार माथ कोना। आजकल म्हार माथ मन कोनी चाव। धणी

वात करता ता कवती आप जीवण एक ही वात है। अर कि सूवे हीं कोनी। बीमारी सू डाकरी सूबती जावही।

डाकरी बीमार ही पण धन रा माह बुराप माय घणू हूयग्या हा। उठण बठण री सरदा कानी ही पण डाकरी आखी रात गेरड़ा सभालती रवती। दिन माय जुगलसिंह सू मिलण भिटण सारू आवना लागारी वात सुणती। वम रै कारण नी रात न नीद न दिन माय। दिनम रो खायोडा सिङ्या ताइ याद कानी रवता पण वरसा पली री वात बिया री रिया सुणाय दवती क करिया जाव मनता घणू ही साचा हा पर सरीर साथ कानी दव हा।

लाम्बी बीमारी माय डील सगला टूटग्या। माचा भाल लिया। बटा-वहू सगळा भळा हूयग्या। रात दिन डाकरी री सवा माय लाग्योडा रवता। अड़ास पड़ोस री लुगाया मिलण भीटण न दरमण करण न आवती रवती। रामनमरी वाता हूवती पण डाकरी रा मन तो घर माय लाग्योडो रवतो। हालत विगडवा लागगी। चखा कम रवा लागग्या। लुगाया माय घूमर फुमर हूवती रवती। ध्यान रामीजणू सरू हूयग्यो क कठही प्राण माच माय नी निसर ज्याव।

डाकरी सगळा रा भाव समझती। पण चावती कि हू अबार कानी मरू। म्हार मरिया पछ थारा घर कुण सभालसी। घररी नीव कुण राखमी। पण ए सगळा वाता वोल कोनी सक हा।

मरतो मिनख अन्तरमुखी हूवतो जाव। आ वात ही डाकरी र साग हुयबा लागगी। आपर गरला दिना माय घूमबा लागगी।

भात बरसा पली नाना सी बीनणा बणन इ घर माय आइ। गुडा गुडी मा दो यू लागता हा। दायू जणा रहता रवता। कई बरसा रा बीच माय अन्तराल पडग्या हो। मुकलावा हूया जणा मोट्यार लुगाई रा रिस्तो समझ माय आयो। मसार र अनुभव र माग नूवा नूवा अनुभव भी हुयबा लागग्या। ए नूवा अनुभव आपर पुराण रिस्त न भुलाय दिया। माह माया माय फसबा लागगी। नौकरी र कारण सहर माय आवणू पडियो। किराय रा छाटासा मकान लेयन रवणू सरू करिया।

पमवाडा फरण रा जतन करिया। फरीज्या काना। माथ कन बठी लुगाया हाथ रो मारो दयन पमवाडा फराय दिया। अधमुली आख्या माय मौत री छिया घूमती लागी मुण्डा खोलियो। हाथ रा इसारो करिया। वरपरा टुकडा दीरीज्यो कठ गीला हूयग्या।

पाग्री नारली बाता न्दवा लागगी। वरम निता छाटा हुयग्या अर मरण रा पल निता लाम्बा।

अहीक्ता अडाक्ता आस वधी। पछ ता साल सुवाई पट मडता गया। सगला टावर जिया कोनी। नाय छारा अर दाय छारी। टावरा र भाग सू आय भी वधवा लगगी। नूवो मकान बणाया। आ सगळी वाता साग माटयार माथ वम घणू हूयवा लागग्या। वम र कारण चोक्सो घणी हुयगा। ई कारण ही माली पडिया रवता पता मकान किराय माथ वाना न्दिया। आपरी हरारत अर माटयार री फिरण री आदत सू वम रात दिन बढता ही जावता हो। ओही लडा" रा मून हा पण न्न डाक्टरी टावर ज्यू पाळता जार हा। कणास रात न वतलावण हुयज्यावती तो आगला 2–3 दिन ओरा कटता। नी ता भाड विगाटा हूवता।

च र माथ हरारत आयगा। होठ हिलाया। वरफ री डळी होटा सू लगाई। लुगाया भोवस हुयगा। प्राण मुड माय सू ज्यासी। हाथ सू इसारो करियो। तुलसी गगाजल चमच सू न्दिया। डाक्टरा हाथ सू इसारा करियो। जुगलसिहजा न बुलाया। मगली लुगाया बार आयगी। पाणी सू भरीज्योडी आख्या लिया जुगलसिहजी आया। गळ माय वाथ घालती बालण रा जतन करियो। अर आपरो कुण उपरला सांस उपर रयग्या अर नीचला क्षास नीचे। घर माय कुहराम मचग्या है मावडी है।

वटवारो

डा सम्पतराय अस्पताल सू आवण र पछ चाय लय नै सहर माय सठ साहुकारा, गरीब, मिलण भौम्ण आळा र घर जायन बीमारा न देखता। बीमार र घर आळा माय सू कोई फीस दय दवतो ल्य लवता अर हाथ जोड़ दवता तो आग टुर पड़ता। फीस लयन कदई गिणता नी। दस बीस जता ही दवता बी माय सन्तोस कर ल्वता। व आपरा घरम बीमार न ठाक माय ही मानता। लाग कवता– डाक्टर साहब आप भोत भोळा हो। फीस पूरी माग न लिया करो।' डाक्टर साहब मुळकन उत्तर दवता– 'आपरी सरणा साहू सेवा कर दय फर माग न जरान बयू हुराऊ। माळ रोटी भगवान देव। म्हारो काम बीमारा न निरोग करण रो है।' रात न नव साढ नव बजी ताई डाक्टर साहब सहर माय रागी देखता रवता। फर घरा पूगन जेब वाली करन घर धिराणी न समळाय दवता अर आप आराम करण खातर साफ माथ बठ ज्यावता। सिनान करन पूजा पाठ करता अर पछ भाजन करन छोरा साग घर धिराणी साम हताई करता। लारला 20 25 बरसा सू डाक्टर साहब री आ ही नम हो। घर रा सगळा भार घर धिराणी माथ नाख राख्यो हो। डाक्टर साहब र दाय छारा अर एक छोरी ही। सगळा रा ब्याव कर दिया हा। छोरा राज री चाकरी माय बा र रवता। छोरी आपर सासर ही।

डाक्टर साहब री घर धिराणी स्याणी अर समझदार ही। हाथ री काठी हा। पण छारी न देवण माय पोली ही। सगळा र सामै हाथ र सार सू दवती पण छाने दवण माय हाथ खुलो राखती। बेटी मान घणा समझावती क तू ओल छान नी दिया कर। जनी बाण पडज्याव वा मरिया पछ ही छूट। डाक्टर साहब सदा ही समझावता क थारो कोई हाथ थोडो ही पकडे। तू थार मन चायो कर पण बेटा–बहुवा न म्हिाय न कर।' छारा री आ ही राय ही। पण वा आपरा आन्त सू मजबूर ही। ई कारण दो यू बहुवा बात बणावती। बारा मतो हो क आप कन हा नी दय न म्हार कन सू दिराव ता घर री चोखी लाग अर म्हारो मान बढ। पण डाक्टर साहब री घर धिराणी गोमती सगळा री सुणन करती आपर मन री ही। रोजीन कवण सू चुप रवणू ही चाखो हो।

हाळा दिवाली, वार त्योहार जनम दिन माथ सगळा भेळा हूवता। अबकै डाक्टर साहब र जनम दिन माथ सगळा भळा हुया। 5 6 दिन राजी खुसी मू गुजरिया। सगळा पाछा जावण री त्यारी कर हा। छोरी सगळा सू पली जावण आळी ही। ऐन मौके माथ सुनार सोन रा लड लय न आयो। छान देवण आळी लड सगळा री निजर माय आयगी। बी वेळा ता सगळा चुप रया। पछ वात रा उतगड हूयग्यो। डाक्टर साहब फेरू गोमतीन समझाई क तू थारी आन्त न नी छाड। छाटी सी बात खातर बेन भाइया माय क्यू बर घाल। आज आपा करा काल आन ही करणू है। तू देव तो थारो हाथ कुण पकड है।

'थान की ठा ता पाना तमक न गोमती बोली— घर चलावणू बडो मुस्कल है। छारी न क कोई सोन री तागडी वणाय दी ? एक लड बणाय दी जक खातर तुळ मचाय दियो। घर खर्चे माय स बचाण न वणाई है। लारल दा तीन बरमा सू छोरी लड खातर केव ही।

मन कय दवती हू बणाय दवतो डाक्टर साहब बाल्या।

थान की ठा तो पड है। वणाई आप र राज माय ? ओ म्हारो बाप हा जको थारा सगळा टाणा मलटाय दिया। नी तो थान ठा पड ज्यावता गामती बाली।

थार अर म्हार मायता माय क फरक है बात पगटता डाक्टर साहब बोल्या-गामती न राजी राखण खातर छोरा माथ थाडी रीस करी अर बाल्या— था लोगा रा हालताई टावर पणू नी गयो। प सी बतावणू भूलगी हूसी। पछ बताय दवती। की दियो तो थारी बेन न हा दियो है।

झट गोमती वाली— हू बी वेळा चेता चूक हूयगी। सुनार ल्याया अर हू देय दी। पछ ता बताय हा दवती। डाक्टर साहब री वात सगळा समझग्या। आप आपर काम माय लागग्या। वात ठण्डी पडगी। डाक्टर साहब लाल्ट बुझाय न गाभो ओढ क सोयग्या। गोमती सायगी।

वरस निकळता रया। त्योहार आवता रया। साल सुहाइ जनम दिन आवता पण सगळा भेळा नी हूवता। कदई छारा आवता कदई बहूवा। एक दो दिन ठर न पाछा बेगा ही जावण री त्यारी करवा लाग ज्यावता। गोमती राजी रवती अर छोरा भी। न बहूवा रो डर रवतो अर नी छारा रो। डाक्टर साहब र मन माय एक गरी उदासी रवती। मन मारन डाक्टर साहब ऊपर

स्यू हसता रवता, मुळक नै बात करता पण एक टास छाती न साळतो रवतो। बात री बात च्यार पाच बरस गुजरग्या।

डॉक्टर साहब माय थोडी थकान आवा लागगी ही। घरा आया पछ डाक्टर साहब बार नी जावता। नित नेम करन हळको खाणू खायन थोडा घूमता अर बेगा ही सोय ज्यावता। हताई करती गोमती उढोक ही कणा नौकराणी जाव अर हू मोडा ढकू। नौकराणी हेलो दियो। गोमती झट मोडो ढकन लाइटा बुझाय न सोयगी।

थकगी क' डाक्टर साहब पूछ्या।

का तो। पण जीव सारा कानी। छोरी रा सुआड हुयान दो मीना हुयग्या। की समाचार कोनी। खावण पीवण माय माडी है। आप केवो तो हू 5 7 दिना माय जायन सभाळ आऊ। गोमती कन सिरकती बोली।

डाक्टर साहब जाण हा क जावण री त्यारी ला प ला मू ही है। पूछण रा तो नाव है। हा डॉक्टर साहब बोल्या— छोरी री सभाळ हुय ज्यासी अर आवती बेळा बीनणी न सभाळ लीज्य। अबक थोडा दिन हुयग्या तू बठ ही बार गई नी। थारो मन भी हळको हुय ज्यासी।

'आपन राटी पाणी रा फाडा पडसी।

'नौकराणा खाणू बणाय दसी। थोडा दूध अर फळ माथ जार रावस्यू।'

'ता पछ काल परस्यू जाय आऊ

हा। मिल आ।'

डाक्टर साहब सगळी बात जाण हा। बीटा बा थ्योडो है ना करण मू की फायदो ना।

सगळी भाळावण दयन गोमता दूज दिन बीर हुयगा।

डाक्टर साहब न सगळी बाता री जाणकारी ही। क कवरसा कमावण माय माठा है। गोमती भी इण बात मू परिचित ही पण डॉक्टर साहब न नी कवणू चाव ही। छोरी मद कमाऊ री लुगाई ही पण थकड माय रावण री बडी बन ही। आपरो ठरसा सगळा माय राखणू चाव ही। गापतो छोरा रा अवडाई माय सा रो दवती अर छान दयन कवरसा रो घाटो पूरा करणू चावती। पार ता निजरी कमाई सू पड मासर र न्यिोड मू ना। राड रो कारण अवडाई है। लुळतो मिनख सगळा रो ही भायना हुव।

डाक्टर साहब रा 5 7 दिन दारा सोरा निकळया। आख दिन सुत्त हूया काढ दिया। दो तीन बार तार दवण री साची पर विचार छोड दियो। मन माय सोची क तबियत इमी खराब तो कानी है डील माय हरारत है। एक दोय दिन आराम करस्या सा ठीक हुय जास्या। सिझ्या नौकरानी दूध देयन गई जठ ताई बाई वास वात नो हा। डाक्टर साहब मोडो ढकन दवाई लेयन सोयगा। आधी रात पछ डाक्टर साहब रो हाट फेल हुयग्यो सूता रा सूता रयग्या। दिनग नौकरानी आयन घटी बजाई। घटी रा आवाज घर माय गूजती री। पड़ूतर ना आयो। नौकरानी आडोसी पाडोसी न भेळा करिया। पणा हा हला पाडिया मोडो पडग्ग्डायो पण पड़ूतर नी आयो। जणा लोगां माय थम बडग्या। हृत रा गगळा सिरी अर अणहूत रा एक ही सीरी नी हुय। आ साचन कोटवाली माय खबर दी। घडी एक माय पुलिस आयगी। पुलिस पूळियो ताड क घर माय घुसी। डॉक्टर साहब मरिया पडिया हा। अस्पताल सू डाक्टर बुलायो। चक अप करन हाट फेल सू मरणू बतायो। गुवाड रा लोग भेळा हूयन बरफ री सिला माथ लास न राखी। तार दिया टेलीफोन करिया। आखो दिन दु ख माय निकळग्यो। रात पडता र साग साग छोरा पूगग्या।

आधी रात पछ छोरी आपरी मा अर बवरसा र साग पूगगी। थोडी ताळ रावा कूका हुया। पछ छोरी बापरी सम्पति माय आपरो हक जतायो। बवरसा की दय लयन समझोतो करण रा सलाह दी। मा रो सभाव छानो कानी हा। छोरी सलाह दी क ब्यार पाता करली जाव। मा म्हार कन रमा इण वास्त आधा हिस्सा म्हार नाव कर दियो जाव बाकी रा दा या भाइया न दय दिया जाव। बात रा बतगड हूयग्यो। कोई सुणण न त्यार नी।

सगला छारा न समझाई पण सुणण त्यार नी हुइ। छारा री मनसा ही दाह क्रिया रा काम कर दिया जाव पछ सगळी गड सळटाय नी जाव। घन रो लालच रिस्ता भूल जाव। आगली पाछली बासणी व द हुय जाव। राणा राण भेळा हुयग्या। बात बणती नी देखन स्याणा री सलाह सू पुलिस बुलाय न खास खास कमरा माथ ताळा जडाव दिया। रसाईघर अर समानघर खुला राख्या। दिनग डाक्टर साहब री पोस्ट मारटम रो दस्तूर सा कियो अर रिपाट बणायन दे दी। सिझ्या पगण र साग साग डाक्टर साहब री दाह क्रिया हूयगी।

डाक्टर साहब रा खास भायला वकील जाघपुर हाईकोट माय घमी सारू गयाडा हो। डाक्टर साहब री मौत रा समाचार रेडियो माथ सुणन रात

न ही रवाना हुय न पाछो आयग्या। पौर एक दिन चढ्या पछ डाक्टर साहब र घर गया। मातमपुर्सी करा। सगळा आपरी वात वताई। वकील साहब चुपचाप सुणता रया। गुवाड रा मिनख भेळा हुयन वकील सू अरज करी क सगळो निपटारा राजी खुसी कराय देव, तो चोखो रसी। वकील साहब पेस कार न भेजन थानेदार साहव न चाबो लयन बुलाय लिया। सगळा ने भेळा करन बठाय लिया। थानेदार कानी देखता वकील साहव बाल्या—आप सगळा ताळा खाल देवा। डाक्टर साहव मरण र प'ली आपरी सम्पत्ति रो बटवारो करग्या है। थेल माथ लिफाफो काढन रजिस्ट्री खोलन छोरी अर कवरसा कानी देखन बाल्या ये डाक्टर साहव री सम्पत्ति माय हक करणू चाव हो पण थार अती ही अरणा नी ही क मन अडीक लवता। थ थार मायत री जती दूर गति करी है वती कोई दुसमण भी नी कर।

कवरसा अर छारी रा मु डा फक हुयग्या।

दुखवा कामू कहियो न जाय

दिनूग रा वखत हा। जज साहब पढ़ण लिखण र कमर माय बैठा लार ला तीन च्यार दिना माय आयोड़ी डाक न देख–हा। हाथिय माय नाना नाट लगाय र निश्चियल करन तारीख लगाव हा। माय ऊपर पंखो चाल हो। ट्यूब लाइट चम ही। छोटा लाम्बा एक पेज रा अर दो च्यार पेज रा भात भात रा सरकारी कागज निकळता जाव हा अर जज साहब री निजर जरूरी जरूरी बाता माथ फिरती जाव ही अर वी क साग हा आगल्या अगूठ माय दब्योड़ी लाल पेंसल निसाण लगावती जाव ही। डाक र पड र साग कई निजू कागज भी निकळता जाव हा। समय भागतो जाय हो पण डाक रो पड ता खाली हवण रो नाम ही कोनी लेव हा। कचड़ी रा वखत साम भागतो आव हो। आज र मुकदमा रा तारीखा मिसला माय मू मू दा काढन आय ही। कई मुकदमा रा आज फैसला सुणावणा हा। व भी आक–झाक न आपर भाग रा निणय लिखण रा तकाजा करता जाव हा। जीव अेकलो पण हा जोख्यू घणा ही। अे सगळी समस्यावा माय जज साहब रास्तो काढता जाव हा। निजू कागज जणा ही आवता जज साहब रा मुण्डा गिल जावता। कई कागजा न देखता ही मुण्ड रा भाव अपसा सू भरीज जावता पण स्याणा आदमी खरा खोटी सगळी बाता न पीवतो अर वखत रो तकादो मान न सगळा जरूरी काम निपटावतो रव। लिलाड माथ पसीन री हल्की हल्की बूदा आ गई हा। बार बार जज साहब बारी माय मू आवत तावड र चिलक न देखता हा। काल री बिरखा र कारण आज तावड माय गरमा थोड़ी ही पण अमूजा घणू हो। थोड़ा सा कागज रिया जणा एक मली सी खाम आपर नाम री थोड़े भणिय मिनख र हाथ सू ठिकाणो करयोड़ो मिली। जज साहब ई खाम न दो तीन बार उलट पलट न देखी अर जाणणू चायो क आ खाम भेजण आळो कुण है पण ऊपर सू देखण सू की पता कोनी चाले हो क इणन भेजण आळो कुण है। हारन खाम रा खूणो फाड्यो अर कागज काढ्यो। वा र मथरी चालती पून रो झोको कणा–कणा ही आव हो फर आवण आळी बिरखा री बात बताव हो। अमूजा बधतो ही जाव हा। चढत सूरज रो तावड़ो पून माथ हो। जज साहब रा कान कमर र बारण काना हा। पसकार र आवण रा वखत हा।

डाव रा कागजहा नताई सळटया कोनी हा।

साम माय मू कागद काढ न सीधो करियो। कागद लम्बो हो। पढण रो पूरा वगत कोनी हो। इण वास्त इ कागद न मिसला र वस्त कानी राख न दूसरा कागद देखवा लागग्या। पमकार री उडीक घणी ही पण वो हालताई आयो कोनी हो। लिलाड माथ तीन तीन सळ एक साग ही आव टा पण थोडी ताळ पछ व सगळा पाछा मिल्ता जाव हा। कारण पेसकार काल ही जज साहब र साम दौर मू आयो है। थोडो भात घर रो काम करन अठ आसी। पमकार निरीक्षण री रिपोट बणासी, हाइकोट रा रिटन त्यार करसी। आज री तारीख री मिसला सभाल सी। कचडी गया पछ वौन तो माथा ही उठावण री फुरसत कानी मिलसी। वकील मुवक्किल सगळा घेर रूसी। पाणी पीवण रो वखत भी कोनी रसी। दस्तख्ता री मिसला अठ भजसी कई मिसला सल्टाण सारू घर ल जासी अर दिनूग वान ओठी भजसी। पाणी र बन दाई रात दिन मरतो रसी। आ सोच र जज साहब र निलाड रा सळ पाछा हुव हा। डाक रा सगळा कागद सळटाय न जज साहब बी कागद न पढण सारू उठायो। पढणा मरू करिया —

श्रीमान जी

हाथ जोडन अरज करू। म्हारो नाम किसनी है। साकिन रणी, हाल बीकानेर। आज बोळा बरसा पली जणा तीन गाल एक साथ ही काळ पडियो म्हारा ब्याव किमन र साग हुयो हा। जद हू टाबर ही। बाळपणा रा दिन भागता दौडता गुजर गया। जणा हूँ दूधडिया उठावण जोग हुई म्हारो मुकलावो हुयो। मुकलाव र थोडा दिना पछ सासूजी न रामजी लायगा। घणा ही थाडा करिया पण व तो सूता जका स्या सूता क फर उठया ही कोनी। माय दोय काळ एक साग। मौत तो भगवान री न्योडी आव पण पणा वणा ही कुमौत भी आय जाव। मौत तो जीवण रो झझट ही मिटाव, पण कुमौत तो कुळरा नाम ही डुबाय देव। सासुजी र आसर रा कर्जो उपर मू काळ, कुमौत माही हा। गठा रा तगादा अर राज रा बोगडी जीवणू हा दूभर कर दियो। ससार व म्हत एक माग ही भारडी दयग्या। एमांन रा तगादो सगळा मू बढर हा।

हूँ आ समली तकलीपा न भोगती जीव ही। दिन र दिना माय ही म्हारा पग भारी हुयग्या। सुआड करण न पीहर आई। छाछ रोटी खाय न दिन निकाळ हो। भगवान न म्हा सुख भी मजूर कोनी हो। गाव माय छाछ मा बात समन राह हुई। समार माम ...

फायदो उठाय न वारो नाम लिखाय दियो । ज'र लावण न ही कन छ'ाम कोनी ही । राज काज रो खर्चो कठ सू मुगत्यो जाव । लय दयन सगळा एको कर न ब्राने पसाय दियो । 302 माय बान 15 साल री सजा हुयगी । म्हारो जनम घोला नगता माय हुयो हो । पण घोला नगत आपरो परभाव दिखासी उण सू पली ही खोटी सान्सती लागगी । तन रो कपडो वरी हुयग्यो अर अन्न रो दाता सू वर हुयग्यो । गोधा री लडाई माय चूटा रो नास हुयग्यो मिनग थका हू राढ जिसी हुयगी । म्हें आ कन ही बानी सोची ही क मन मोटयार जीवता थका रडापा भोगणू पडसी । बखत कर जिमी वरी कोनी कर । औ विधाता रो लेख है जिको मन भोगण हो पडसी । मोटयार र जावताही गाव री गळी गळी म्हारी दुसमण हुयगी । एक दिन रातोरात गाव छोडन म र री सरण ली । अब अठ गर माय सठा र गोबर पोठा उठाऊ अर धोरो सोरो दो वारो पेट भरू । पेट किलोरो पापी है जिको न तो कद ही भरीज अर न भरियो जाय सक ।

पाछन दिना न याद कर-कर न राऊ अर राय रोय न तो मरियो कोनी जाय सक । मरण र पली ई डोकरी रा घरही बसाणो है । हालताई म्हारो मन भरियो कोनी है । काल रिम रिमन मोमळो हुवतो जाव पण भावना आमा र आधार साथ जीव है । सागर है । आपन के बताऊ जणा ही आभ माय बादळ उमट है बिजळी झबका मार, म्हारा जीव आवळ बावळ हुय जाव । मावणिय रा दिन याद आय जाव । डोकरी बा रा जिया ही म्हार माथ हाथ राखन साव । बो भी बखत हो जणा हू बारी छिया माय निधडक हुयन सोवती हो । निरखा री मोमी मोटी छाटा म्हार डील माय एक मागही सौ सौ काम जगाय देव । रमण भलण री मन माय आवण लाग जाव । हू बगत री सतायोडी अर रोटी री मारियोडी हू । हू आपन के अरज कर आप घणा ही समझदार हो । हालता' बारी आगरथा र आयटणा रा थाव म्हार हाथल माय है । जणा कणा हा हू आ कवती कि थ ईया काम करो हा । अ टूट ज्यासी । थ मुळकन उथळा दवता अ म्हारी याद रा निसाण है । सिनान करती वळा जणा डील माथ हू हाथ फरू, ऐ घाव म्हारी आगळया सू कुचरीज जाव अर म्हारी आस्या मू एक साथ ही सौ सौ चोमरा बवण लाग जाव ।

बात री बात है । हू मठारा गाय गूजर कन दुआवण साऊ खडी ही । गूजर गाय र थण धोय न गूणियो गोडा माय न्वाय न थणा माय हाथ घालबा लाग्यो जणा गाय कूदवा लागगी । गूजर उठन गाय न घूम फिरन न्हवी अर

बोल्यो आ तो रुआ माय है। साह वन लजावणी पडसी। आ कथन याणो पाछो खोल लियो अर म्हार कानी दगन मुळकनै कह्यो कणा ही ये भी रुआ माय आवो हो कोनी ?

हू यूं मिटनी बोली अठ तो बीम रा दिन पाधरा करा हा। जक दिन पछ म्हारो मन इस्यो खराब हुयो क न रात न नींद आव अर दिन माय चन। जणा कणा आम झपक तो ईया मालम पड क व मन गाडा नाच दवाय राखी है अर हू पमवाडो फरण रा जतन करू। इतन आम खुल जाव अर सफेरो मागीडा काळा अधकार खावण न दौड है। आपन क बताऊ ! लुगाई री बात लुगाई समझ है। पौ–मा री डाफर मन आगी रात ही कोनी सोवण देव। पून र फटकार म बाजता किवाड भूत रो वम करावता रव।

श्रीमान जी आपन के लिखू ! कपडा फाटघाडा है पण डील वी माय सू ही बिगरता दील। चौमास माय अकूरडी ही हरी हुय जाव। मिनख री बात ही क कवणी। जमानो नाजुक है। म्हारी जरूरत समाज री आवश्यकता है। ज म्हारो पग उल्टो सीधो पड जाव तो आ म्हारा कसूर कोनी हुवलो। मन मा रा चाहिज। सा रो मारग सू भटकाय भा दव। हू धोखो कोनी देवणी चावू। म्हारी आस्था अर विश्वास डिगाणा कोनी चावू हू। इण वास्त आप सू अरज करू हू क म्हार माम याय कराला।

न्याय करण आळा भगवान रा रूप हूव

आपरी

बिसनी

बेवा किसन री

कागद र पूरो हुताही ल्य रा टणका लाग्या। जज साहब र लिलाड माय भावारा भरूळिया आवा लागग्या। पमकार री सदेसो आयोडो हो क बीरी घर आळी री हालत खराब है इण वास्त आज बा कचडी आय कोनी सकला। जज साहब कागद माथ पा पा लगाय न न्मोसिया करिया। सगळी डाक न मळा करन व बडी पुगावण रा अरदलान हुकम दिया।

अर वो दिन जज साहब रा बयान लवण माय फमसा लिखण माय पेसारी तारीखां देवण माय अर तहमालदारा रिपोर्ट लिखण माय गुजर गयो। सिंझ्या बगळ पूग्या जणा बाळा बरग्या हा। सावणा-भावणा करन घूमण न गया परा। तरोताजा हूयन पाछी रात पडियां पछ पाछा आया। पाछा

मिसळी निकाळवा लागग्या । काम करतो करता दस वजण लागगी । पाछी घराण आवा लागगी ही । बारी मांय सू अंधार घुप दीग हा । ध्यान सू देख्यो तो पतो चाल्यो कि विरखा हुवण आळी है । आभो बादळ सू भरियो हो । दूर दूर ताई विजली भरका मार हो । पून ठ र ठ र न चाल ही । वधाउड़ा आवा लागग्या हा । जज साहब पाछा काम सलटावण न वठग्या । जित विमनू थल्ड हुता मागरी मिसल साम आई । विनूग आळा मगळा समाचार आम्बा आग फिर बा लागग्या । जज साहब रा विचार पाछा डटवा लायन घूमबा लागग्या ।

काल री ही तो बात है ।

सरकारी गाडी पूगळ रा पार करन सिविल लाइ म मांय पूगी जणा रात री नव बजवा लागगी ही । छाना छिड़वा थोन्दी ताळ पली ही हट्या हा । सगळी सड़क पाणी सू भरी ही सड़क सुनसान ही ह। । जाण आधी रात हुयगी है । भूनी भटकी गव नो कार स्टार्ट सू निकळ जाव ही । सरकारी लान्टा भूत रो बेम घराव ही । बणा बणा ही गाडी रा चक्का छप छप कर हा । बगल आग गाडी गडी हुयन हाल दियो । गाडी र न्यार सू पेसकार उतरन फाटक खोलियो । सामी उजामन माय लट्टू बल हा । मोन्टर री आवाज सुणन जज साहब री घण कमर रो बाल्णू खोल्न बार आई । सुघड लुगाई ही । वरस कोई 40 45 री लाग ही । चाल रो ठसको जुवानी न ठोकर मार हो । नौकर न आवाज दवण र मु डो खोल हा जत न नौकर आयन गाडी सू सामान उतारबा लागग्यो ।

साहब मुलरायन उतरिया । वा आळमा र स्वर मांय बोली —

थोळो मोडो करिया ।

विरखा र कारण गाडी स्पीड कोनी पकडी

आ देस । हू सावे गी क थोरा मोडो वगो जरूर हुय ज्यासी । लार लार चालती बोली ।

चाय तो बणाओ । साफ मांय वठता जज साहब बोल्या ।

मास्टर रो सगळो सामान कमर माय आयग्यो । चाय रो ट्रे आई । घण बणाय न जज साहब न दी । फर आप वास्त बणावण लागगी । चाय री चुस्की लवता जज साहब बोल्या पसकार जो न ।

हा चाय व नास्ते रो कहियो पण वतो चाय ही ली । खाणो खायन

आया हाँ बतायो, चाय पीवती जज साहब री धण बोनी। जज साहब बोल्या 'तहसीलदार भगवानसिंह बडो स्याणा है। म्हारी चोखी की। आपर वास्त धी रो पीपो खिनायो है।

'हा!' म्हाला हाथ जिणन ही आवण री कोनी देर। मन ही कातिमरो रो नूता दियो है। दो यू जणा होळ होळ चाय पीव हा। पगारी आवाज सुणन जज साहब बारण कानी देख्यो। पसकार न देखन बोल्या — अब आवो। माल मिल लिया। गाडी आपर घर ताई छोड देमी।

पेसकार जी हुकारो भरने मुडग्या। बगल माय सू पाछी जावती गाडी री हान सुणीज्यो। बाथरूम कानी जावता जज साहब बोल्या—हू कपडा पळटा आऊ। मम साहब उठन कीचन कानी जाय न दूध ठडा कर माहब र सोणे र पलग पन राख्यो बगले रा फाटका ढकण रो कह्यो। अन न जज साहब बाथ रूम सू आयग्या। धण बोली ये चालो। दूध ठडो करन राख्या है। हू अबार आऊ हू। आ कवती बाथरूम माय बडगी।

जज साहब सोवण आळा कमर माय जाय न टेबुल लम्प जळायन दूध पीवन पलग माथ लेटग्या। अर सूता सूता लारला दिना र अखबारा रा कागज पलटबा लागग्या। धाना र साग नीद आयबा लागगी। आधी घडी मुस्कल सू बीती हुमी। मम साहब कमर माय बडन पादर ढकियो। खटका सुणन जज साहब जाग्या। गाउन करने राखती बोली—म्हारो तो बिरगा माय गाळजा बठतो जाव हा—मन सिरकता साहब बाल्या जणा ही ता हू आ जाण न वेगी आयो हू। धी अर टटाळता बोल्या। वा भेळी हुयबा लागगी। जज साहब वन सिरकता जाव हा।

मम साहब बोल्या— आज ईया उदास किया? मसळता जज साहब बोल्या—'एक गेरा ममस्या है जकी रा मन मठ ही समाधान कानी दीख। हूँ ना या कानी पाप रा भागी हू। आ केयन सगळा कागद पढन सुणाया। बार जार सू बिरमा हुवा लागगी ही। पाणी रा परनाळा पडबा लागग्या। हाथ पकडन उठावती बोली— हू तो की कोनी जाणू मन ता आज भी ईहा मालम पड कि म्हारा ब्याव तो काल ही हुया है।

घडी ताळ ताइ जज साहब घावान माजता रिया। धण बोनी न मोजा हा

पावा न

व अठ कोनी है काळज माय है आ कवती धण मोवण रो जतन करवा लागगी । पण जज साहब री आंख्या माय नींद कठ । जणा ही सोवण रो जतन कर साम खडी लुगाई किरपा मागती दीख अर केव जज साहब ! म्हारो भलो कीज्यो जज साहब बडवडायन उठग्या । आ काई न्याय है । जको इन्सान न रिमाय रिमाय न मार । धण हडवडाय न उठी अर बोली काई के वो ?'

नींद कोनी आव

अठीन आवो । मन गोवनी बोली— नीद आय ज्यासी ।

चाद चढ्यो गिगनार

सोचता साचतो महेन्द्र कुर्सी सूं उठ र कल्पना सूं मिलण सारू टुरग्या । सूरज माथ पर चमक हो । बाजती लू पटपड़ा फाड़ ही । डील सूं चूवतो पसीनो बुस्सट र ळागण सूं पला हो सूख हो । तावड़ सूं आरथो मोचीज ही गुद्दी लाल हुव अर टाट बळ ही ।

महेन्द्र रा पग काम रा गति मा खाथा म्हाथा उठता हा । डामर री सड़क सूनी ही । भूल्या भटक्या ही कोइ मिनख अर जिनावर सड़क माथ दीख हो । धोळे दोफारा सड़क माय चालणू भोमर माथ चालण जड़ो हो । बळता लू माय मुरद न बाळण खातर री लय जाव जणा मिनख सूं कर बार जाव । तावड़ रै कारण डामर पळघळ हो जक सूं सड़क चिप चिप करण लागगो ही जाण सड़क रा हियो गरमास स पसीज हो । सड़क धरती माता सूं ठडक माग ही पण धरती खुदो खुद ठडक पावण सारू भगत री जिया गडका खाव ही । बा बापड़ी सड़क न कठ सूं ठडक देवती । इण कारण सड़क रो हियो झुर हो ।

महेन्द्र मन री गति सूं आग बध हो । लिचपिचो जम्यो डीरो पग पकड़ ही । पाछा उठता जणा डीरो पगरखी सड़क सूं चिपण रा जतन करतो । इ झटक र साग महेन्द्र र विचारा माय सागीड़ी चोट लागसी अर भळ सावचेत हुयन आग चालतो । बो आपर ऊध पाधर विचारा माय गेरो रम्योड़ो हो पण डीरो पग ठावी जग्या पासी ही जाव हो ।

पनवाड़ा र अठ पान खायन सड़क माथ एक पीक थूक्यो जाण आपरा अस्थिर विचार पीक साग सड़क माथ नाख दिया है । जब माय सूं रूमाल काढ़न पनवाड़ी री दुकान माय लाग्योड़ दपण माय आपरो मूंडो देखन रूमाल सूं रगड़ न पूंछ्यो । जाण सगळी सुस्ती न पूंछ न अलगाय दी है । पीक थूक न आग चाल पड़िया ।

कल्पना र घर र बारण कन पूग न कूंगा सरू मढाया । फर ध्यान आयो क आज बाई छुट्टी थाड़ी है जका ना घर मिलसी । अ विचार आवता

मूगा है अर मा सस्ता। काम रा रिस्ता पट गू है। अब री मूळ जरूरत गेगा है। सामै माच बठी कल्पना रा मूडा घणा साफ दीसवा लागग्या। रवन जरूरत है म्हारी अर मन इण री। गेनुवा री जरूरत मिल र गर नूवा जरूरत न जलम देव। म्हा दा'या रा ममार अळगा अळगा है अर विस्वास सगळा सू।

महेन्द्र र लिलाड माथ पसान रा बूदा झास्वा लागगी। बान इहा मालम पडण लाग्या क उण रा सगळा विस्वास पसान रा बूदा साग बवण लागग्या है। थोडा आस्वस्त हूयन प्लट री सगळी चाय एक घुटक र साग पीव न क्प प्लट आळ माथ राग्या। जेब मू रुमाल काढन लिलाड रगड रगड न पूछ्या। आपरा सगळा विचार साफ करणा चाव हो। विचारा र भतूळिय न साफ कर र महेन्द्र आठा गू सून्य माय एक चुम्बा लिया। कल्पना आ देखन सरमायगी महेन्द्र री चेतना दौडवा लागगी। इच्छावा बळवती हूवती जाव ही। बो कल्पना न भीचणू चाव हो कसक भाचणो चाव हो जक मू सून्यता एकाकार हूय जाव। उण रो मासल डील टूट टूट न पडवा लाग।

ढळती दिन गावरा र आवण री सनसो दव हो। टावरा रो आवणो ही सून्यता रा अ त हो। जक मू बो उतावळो हूय रयो हो। मान रा पडी महेन्द्र री चेतना र काना माय खडखडी ज ही। महेन्द्र उठ न भागणो चाव हो पण पग उत्तर देव हा जणा बो इणी भात पडिया रवणू चाव हो। हाठ सून्य माय चुम्बन ल्यन चुप हा। हाथ मना बापरा मा कुर्सी र हाथ माथ हा। चेतना रा साकार रूप कुर्सी माय पडिया हा। महेन्द्र उठ न कल्पना कानी चाल्यो।

काना र पडद माथ ऐरण की सी चाट लागा। मोड रा कडी जार जोर सू खडखडीजी। कल्पना माडा गोतण ताई गई अर महेन्द्र एक सून्यता रा बाथ लिया

कावाजा कावाजा र हाव सू सगळो घर गूजण लागग्यो। महेन्द्र नावण घर मायन मू डो धायन पाछो आयो। सून्य माथ तष्णा री ग री छिया घूमै ही। एक जळन छिया सू ग रा हूवता जाव ही।

पाच बजण आळा ही। महेन्द्र पाणी पी र प्रम कानी टुरग्या। दाफारा जकी सडक आदमी रा चरण चूमन ताई तरस ही बा अजार मीनखा सू भरा यार ही। मिनखा रा रळा कीडी नाळ दाई चाल हा। कदास ज काई एक पल ठरणू चाव ता लार सू धक्को देय न लाग बीन आग टिपाय दव। लाचार

हयन धक्को खायन आग बहीर टूय जाव । आ भीड माय हो अहम् री भरि योडी । मीनखा री भीड जकी भूत र सा'र जीव, वनमान न झूठताव अर भविस्य र अन्धार माय की टटोळ । महेन्द्र ई भीड माय अणमणा हूयोडो धक्का खावतो चाल हो । वीरो मन लार हो पण पग आग चाल हा । आख्या खुली ही पण दीस की कोनी हो । वो हर एक मिनख न जाणण रो जतन कर हो । सगळा च रा अणजाण सा आख्या आग घूमै हा । माथो की काम नो कर हा । भूनो सो हो । मशीन री खडखडाट सुण न महेन्द्र रा होस बावडियो न जा प्रेस पूगग्या है ।

होळ होळ सगळी प्रेस खाली हूयगी । महेन्द्र एक ला टिल्न सो बठ्या हो । टबुल माथ लण दण रा कागज पडिया हा । महेन्द्र कागजा माय काळा आखर भागता देख हो । भागता भागता आखर कल्पना रो रूप धरती जाव हा । उण री साम जोर मू चाल ही । कानां माय सुणीज ही एक आह ।

मन्त्र माथ माथै मू जावता माइकिल सवार घटी बजावतो जाय हो । घटी री आवाज सुणन महेन्द्र रा हाम बावडियो । सोच्यो— अठ कठ कल्पना । प्रेस माय बठ्यो हू । महेन्द्र हिसाब ऊ धा लिख मारयो । माथो चक्करी बम हूयोडो हो । सूना सो आख्या फाड-फाडन देख हा । छाती माय सुवा मण भार पडियो है । प्रेम र बारण माम मू डावडया गीत गावती नीसरी—

चाल चढया गिगनार किरत्या ढ्ळरहिया जी ढळ रहिया
जा या ई रूत मा घरै पधार माऊजी मारजा जा मारजा ।

मूगा है अर नी सस्तो। काम रा रिस्तो पट मू है। जन री मूळ जरूरत रागा है। सामै माच बठी कल्पना रा मू-डो घणा साफ दीसवा लागग्या। ज्णन जरूरत है म्हारी अर मन इण रा। दोनुवा री जरूरत मिल र एक नूवी जरूरत न जलम देव। म्हा दा या रा समार अळगा अळगा है अर विस्वास सगळा सू।

महेन्द्र र लिलाड माथ पसान री बूदा झाकवा लागगा। वाा इहा मालम पडण लाग्यो क उण रा सगळा विस्वास पसीन रा बूदा साग वबण लागग्या है। थोडा आसवरत हूयन प्लेट री सगळी चाय एक गुटक र साग पीव न वप प्लेट आळे माय राख्या। जेब सू रूमाळ काढन लिलाड रगड रगड न पूछ्यो। आपरा सगळा विचार साफ करणा चाव हो। विचारा र भतूळिय न साफ कर र महेन्द्र आठा सू सूय माय एक चुम्बा लिया। कल्पना आ देखन सरमायगी महेन्द्र री चेतना दाडवा लागगी। इच्छावा बळवता हूवती जाव ही। वो कल्पना न भीचणू चाव हा कसक भीचणो चाव हो जक सू सूयता एकाकार हुय जाव। उण रो मासल डील टूट टूट न पडवा लाग।

ढळतो दिन टावरा र आवण री सनसो दव हा। टावरा रा आवणा ही सूयता रा अन्त हा। जक सू बा उतावळा हूय रया हा। मान री बडी महेन्द्र री चेतना र काना माय लडखडी ज ही। महेन्द्र उठ न भागणो चाव हो पण पग उतर देव हा जणा बा ज्णी भात पन्पिया रवणू चाव हा। होठ सूय माय चुम्बन लयन चुप हा। हाथ मना वायरा सा कुर्सी र हाथ माथ हा। चतना रो साकार रूप कुर्सी माथ पडियो हो। महेन्द्र उठ न कल्पना काली चाल्यो।

काना र पन्द माथ ऐरण की सी चाट लागो। माड रा बडी जार जोर सू खडखडीजी। कल्पना मोडा खोलण ताई गई अर महेन्द्र एक सूयता रो बोध लियो

काकाजी, काकाजी र हाक सू सगळो घर गूजण लागग्या। महेन्द्र मावण घर मायन मूडो धायन पाछा आयो। मूड माथ तप्णा री ग री छिया घूमै ही। एक जलन छिया सू ग रा हूवता जाव ही।

पाच वजण आळी ही। महेन्द्र पाणी पी र प्रेम काना टुरग्या। दाफारा जसी सडक आदमी रा चरण चूमन ताई तरस ही वा अजार मीनला सू सरा वार हा। मिनखा रा रळो कीडी नाळ दाइ चाल हा। कपास ज काइ एक पल ठरणू चाव ता लार सू धक्का देय न लाग बीन आग टिपाय दव। लाचार